

अंक 2022 - 2023

कौशल निधि

(E - MAGAZINE ,Website : <http://gckosli.ac.in>)



राजकीय महाविद्यालय कोसली (रेवाड़ी)

“ भाषा की बाध्यता और सीमितता से परे लेखन आत्मा की तुष्टि का सबसे प्रभावशाली, सर्वोत्तम एवं सरल तरीका है” प्राचार्य डॉ. सुधीर यादव



प्राचार्य
डॉ. सुधीर यादव
राजकीय महाविद्यालय , कोसली

संदेश

मुझे यह लिखते हुए बहुत ही हर्ष एवं आनंद की अनुभूति हो रही है कि राजकीय महाविद्यालय कोसली की वार्षिक पत्रिका 'कौशल निधि' के प्रथम अंक का प्रकाशन शीघ्र होने जा रहा है। पत्रिका महाविद्यालय की छवि को न केवल रेखांकित करती है बल्कि विद्यार्थियों की रचनात्मक, सृजनात्मक, एवं छुपी हुई लेखन कला को एक ऐसा मंच भी प्रदान करती है जिससे वे अपने विचारों की अनुभूति, स्वच्छन्द एवं उन्मुक्त कल्पना को सुधी पाठकों तक पहुँचाने में सक्षम हो। निसंदेह विद्यार्थियों को अपनी सृजनात्मक ऊर्जा एवं आत्मविश्वास को प्रबुद्ध व प्रखर बनाने का सुनहरा अवसर इस पत्रिका के माध्यम से प्राप्त होगा। महाविद्यालय पत्रिका 'कौशल निधि' से जुड़े विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को मैं अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ व इसके सफल प्रकाशन की कामना भी करता हूँ।

(डॉ. सुधीर यादव)

सम्पादक मण्डल



प्रथम पंक्ति : (बाएँ) डॉ. लाजवंती , मुख्य सम्पादक. (मध्य) डॉ. सुधीर कुमार यादव , प्राचार्य . (दाएं) डॉ. विवेक कुमार .
द्वितीय पंक्ति : (बाएँ से) श्री ओमप्रकाश , सम्पादक. श्री मंजीत सिंह , सम्पादक . श्री नागेश , सम्पादक . श्री संजीव कुमार , सम्पादक

“ लिखते तो वे लोग हैं, जिनके अंदर कुछ वेदना है, अनुराग है, लगन है, विचार है”

.....मुंशी प्रेमचन्द



माननीय श्री लक्ष्मण सिंह यादव , विधायक कोसली एवं डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य खेल दिवस के अवसर पर



माननीय श्री कँवरपाल गुर्जर , शिक्षा मंत्री हरियाणा सरकार , माननीय श्री लक्ष्मण सिंह यादव , विधायक कोसली एवं डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य श्री वीर कुमार यादव , वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता , श्री हुकम सिंह यादव, वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता. श्रीमती सरोज यादव, सामाजिक कार्यकर्ता द्वितीय दीक्षांत समारोह के अवसर पर.



अनुक्रमणिका

क्रम सं०	विषय	लेखक
1.	तुलसीदास की समन्वय भावना	सुरेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
2.	सीख	डॉ लाजवंती, असिस्टेंट प्रोफेसर हिन्दी
3.	ई -कॉमर्स का व्यवसाय में महत्व	आमप्रकाश, असिस्टेंट प्रोफेसर वाणिज्य
4.	भारतीय मुद्रा के वैश्वीकरण की संभावना	हकीकत, असिस्टेंट प्रोफेसर वाणिज्य
5.	शिक्षा और संस्कार	डॉ वंदना निशाल, असिस्टेंट प्रोफेसर
6.	माँ	त्रिदेव, असिस्टेंट प्रोफेसर गणित
7.	शिष्टाचार की बातें	संदीप यादव, असिस्टेंट लेक्चरर
8.	बच्चे	जसवंत जाखड़, असिस्टेंट प्रोफेसर
9.	हिंस बोसान, ईश्वर कण	डॉ जसमेर अहलावत, असिस्टेंट लेक्चरर
10.	बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ	दिव्या कुमारी, स्नातक प्रथम वर्ष
11.	औरत	सोनिया, विज्ञान स्नातक प्रथम वर्ष
12.	दीया बनकर आप जले	नीतू, विज्ञान स्नातक प्रथम वर्ष
13.	वीरों की गाथा	अंजली, विज्ञान स्नातक
14.	किस्मत पर विजय	चंचल चौहान, स्नातक द्वितीय वर्ष
15.	चलना हमारा काम	कोमल, बी.कॉम. तृतीय वर्ष
16.	बेटी होना गलत है क्या?	रॉनक, स्नातक प्रथम वर्ष
17.	हाँ मैं जल हूँ	मनीषा, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
18.	पैसा	मनीषा, बी.कॉम. द्वितीय वर्ष
19.	बीती यादें	अंजली, स्नातक प्रथम वर्ष
20.	आतंकवाद	रोहित यादव, स्नातक प्रथम वर्ष
21.	मेरी लाइफ मेरे रूल	मोहिनी, स्नातक तृतीय वर्ष
22.	आज मुझे भी थोड़ा जानो ना	खुशबू चौहान, स्नातक द्वितीय वर्ष
23.	माँ	महक यादव, स्नातक तृतीय वर्ष
24.	नया जमाना	रजत लाल बहादुर, बी.कॉम. तृतीय वर्ष
25.	क्या पूछूँ मेरा भारत महान नहीं है?	पिंकी शर्मा, विज्ञान स्नातक प्रथम वर्ष

INDEX

Sr.No.	Title	Writer
1	The Relationship Between Oil Prices and Inflation	Vivek Kumar, Associate Professor of Economics
2	Paradigms in Food Preservation	Yogesh Yadav, Assistant Professor of Botany
3	The Spirit of Literature	Manjeet Singh, Assistant Professor of English
4	Mathematics Matters in Everyday Life	Sandeep, Assistant Professor of Mathematics
5	Noise of Success: Outcome of Consistent Hard Work	Dr. Manju Yadav, Assistant Professor of Chemistry
6	Importance of English	Vikash Sharma, Extension Lecturer (English)
7	The Role of Media in Our Society	Vikash Sharma, Extension Lecturer (English)
8	Your Best	Tarun, B. Com.2nd Year
9	Wonderful Nature	Jyoti Yadav, B. Sc. 1st Year
10	College Life: A Romanticized Phase	Meghna, B. A. 1st Year

हिंदी भाग



मुख्य संपादक की कलम से

प्राचीन भारतीय आचार्यों ने सृजन (काव्य विशेष के परिप्रेक्ष्य में) के तीन हेतुओं की पहचान की है- प्रतिभा, व्युत्पत्ति तथा अभ्यास। प्रतिभा जन्मजात है, व्युत्पत्ति सामाजिक संसर्ग के परिणामस्वरूप उत्पन्न ज्ञान है और अभ्यास का तात्पर्य है निरंतर किये जा रहे प्रयासों के परिणामस्वरूप रचनात्मकता के विकास से है। सामाजिक दृष्टि से महाविद्यालय एक ऐसा ही मंच है जिसके भीतर छात्रों में रचनात्मक क्षमता का विकास इन तीनों मापदंडों पर किया जाता है। यद्यपि विद्वानों ने रचना के अन्य कारण भी बताए जिनमें आचार्य मम्मट ने अपने ग्रंथ काव्य प्रकाश में शक्ति, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्यत्व का बीज रूप स्वीकार किया है।

सृजनशीलता एक मानवीय गुण है। युवा वर्ग की सृजनात्मक, रचनात्मक शक्ति से परिचित कराता हुआ महाविद्यालय ई- पत्रिका "कौशल निधि" का यह अंक सुधी पाठक वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष व गर्व का अनुभव हो रहा है। कौशल का अर्थ है- कुशलता, दक्षता। निधि का अर्थ है -कोष, भंडार, खजाना। "कौशल निधि" का अर्थ हुआ 'कुशल कोष' जो साहित्यिक दृष्टि से भी सार्थक एवं उचित है। इससे पत्रिका के नामकरण की सार्थकता सिद्ध होती है।

युवाओं को अपने राष्ट्र की गरिमा, महिमा एवं गौरव के अनुकूल सामाजिक, राष्ट्रीय उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। उनका लक्ष्य पुनः भारत को विश्व गुरु के स्थान पर ले जाने का प्रयास होना चाहिए ताकि भारत विश्व का पथ प्रदर्शक बन सके। वसुधैव कुटुंबकम् की धारणा को अपनाते हुए सृष्टि के समस्त जड़ चेतन पदार्थ से स्वयं भी प्रेम करें और दुनिया के लिए प्रेम का संदेश देना उसका लक्ष्य बनेगा तभी विश्व शांति स्थापित होगी।

विद्यार्थी सामाजिक परिवेश में घट रही घटनाओं से सीखते हैं, रचनाकारों को पढ़ते हैं और महाविद्यालय की गतिविधियों में भाग लेते हुए चिंतन की प्रक्रिया से समृद्ध होते हैं। इस चिंतन के फलस्वरूप विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का संचार होता है। महाविद्यालय की ई-पत्रिका विद्यार्थियों की इस अभिव्यक्ति का प्रकाशन करती है और इसे समाज में प्रसारित करने का कार्य भी करती है। यह प्रसार ई- पत्रिका के माध्यम से और अधिक सुगम, तकनीकी तथा विस्तृत पटल पर संभव होता है। प्रत्येक समाज की सकारात्मक गतिशीलता हेतु ऐसी सृजनात्मक गतिविधियों की महत्ता स्वयं सिद्ध है। पत्रिका में लेख, कहानी, निबंध, कविताएं और विज्ञान से संबंधित विभिन्न विचार वाले लेख शामिल किए गए हैं।

अंत में मैं अपने सभी शिक्षकों के सहयोग के लिए आभार व्यक्त करती हूं। विशेष रूप से हमारे प्राचार्य, डॉक्टर सुधीर कुमार यादव जी को संपादक समिति की तरफ से आभार व्यक्त करती हूं जिनके कुशल नेतृत्व, मार्गदर्शन एवं प्रेरणा के द्वारा ही यह दुष्कर कार्य सुगम एवं संभव हो सका है। मैं विद्यार्थियों को भी बधाई देती हूं जिन्होंने बड़े उत्साह से अपनी रचनाएं प्रेषित की।

डॉ०लाजवंती
मुख्य संपादक
हिंदी विभाग

तुलसीदास की समन्वय भावना

समन्वय भारतीय संस्कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है। समय-समय पर इस देश में कितनी ही संस्कृतियों का आगमन और आविर्भाव हुआ। परन्तु वे घुल मिलकर एक हो गईं। समन्वय को आधार बनाने वाले लोकनायक तुलसी ने अपने समय की जनता के हृदय की धड़कन को पहचाना और 'रामचरितमानस' के रूप में समन्वय का अद्भुत आदर्श प्रस्तुत किया। तुलसी सही अर्थों में सच्चे सूक्ष्मद्रष्टा थे और उन्होंने बाल्यकाल से ही जीवन की विषम स्थितियों को देखा और भोगा था इसलिये वह व्यक्तिगत स्तर पर वैषम्य की पीड़ा से भली-भाँति परिचित थे। उनकी अन्तर्भेदी दृष्टि समाज, राजनीति, धर्म, दर्शन, सम्प्रदाय और यहाँ तक कि साहित्य में व्याप्त वैषम्य, असामनता, अलगाव, विच्छिन्नता, द्वेष और स्वार्थपरता की जड़ों को गहराई से नाप चुकी थी और उनके भीतर छिपी एक सर्जक की संवेदनशीलता यह भाँप चुकी थी कि वैषम्य और विच्छिन्नता के उस युग में लोकमंगल केवल सामंजस्य और समन्वय के लेप से ही संभव था। तुलसी ने एक हद तक समन्वय का मार्ग अपनाया है, लेकिन केवल 'समन्वय'का 'समझौते' का नहीं। उन्हें जहाँ कहीं और जिस किसी भी रूप में लोक-जीवन का अमंगल करने वाली प्रवृत्ति दिखाई दी है, उसका उन्होंने डटकर विरोध भी किया है, वहाँ वह थोड़ा भी नहीं चूके है। "आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी" भी तुलसी को लोकनायक की संज्ञा देते हैं - "लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय कर सके, क्योंकि भारतीय समाज में नाना प्रकार की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियाँ, साधनाएं, जातियाँ, आचार, निष्ठा और विचार पद्धतिया प्रचलित हैं। तुलसी का सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है। तुलसीदास एक ऐसे मनीषी, चिंतक, भक्त और जन कवि हैं, जिन्होंने अपने राम की पूंजी के बल पर तत्कालीन परिवेशगत समस्याओं का निराकरण किया। जैसे तुलसीयुगीन समाज में जाति-पाँति और अस्पृश्यता का बोलबाला था। उच्च वर्ण के व्यक्ति निम्न-वर्ण के व्यक्तियों को हेय दृष्टि से देखते थे। शूद्र वर्ण के लोग सभी प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक यहाँ तक कि शैक्षिक अधिकारों से भी वंचित थे। ऐसे में उन्होंने रामचरितमानस में ब्राह्मण कुलोत्पन्न गुरु वशिष्ठ को शूद्रकुल में उत्पन्न निषादराज से भेंट करते हुए दिखाकर ब्राह्मण एवं शूद्र के मध्य समन्वय का उच्च आदर्श प्रस्तुत किया है। समन्वय की विचारधारा को सशक्त बनाने के लिए तुलसी ने अपने युग, परिस्थितियों का गंभीर अध्ययन और विवेचन किया होगा, तभी तो जो धर्म के नाम पर अनेक सम्प्रदायों में आडम्बर, अनाचार, जटिलता, पुरोहितवाद जैसी कुरीतियाँ पनप रही थी वहाँ भी तुलसी ने इस विषमता को समाप्त करने के लिये समन्वय का मार्ग अपनाया। यहाँ तक कि तुलसी ने सेतू-निर्माण के समय भी राम से शिव की आराधना करवाकर समन्वय का आदर्श प्रस्तुत किया। शैव और वैष्णव सम्प्रदायों के समान उस युग में वैष्णव और शाक्त सम्प्रदायों में भी पारस्परिक वैमनस्य पनप चुका था। वैष्णव विष्णु के उपासक थे और शाक्त शक्ति के तथा ये दोनों भी निरन्तर संघर्षरत रहते थे। तुलसी ने इस संघर्ष को समाप्त करने के लिए तथा उक्त दोनों सम्प्रदायों में सामंजस्य स्थापित करने

के लिये सीता को शक्तिस्वरूपा बताया। तुलसी की धार्मिक समन्वय की दृष्टि हमें सगुण और निर्गुण भक्ति धाराओं के समन्वय में भी देखने को मिलती है इसलिये उन्होंने सगुण और निर्गुण भक्तिधाराओं के बीच भी समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया। उन्होंने अपने आराध्य श्रीराम को सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में देखा तथा उपासना की।

इस प्रकार राजा व प्रजा दोनों के कर्तव्यों का निर्धारण करके समन्वय स्थापित किया। इसी प्रकार उन्होंने श्रीराम के परिवार के माध्यम से पारिवारिक समन्वय का उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने पिता और पुत्र, पति और पत्नी, सास और पुत्रवधु, भाई-भाई, स्वामी और सेवक तथा पत्नी और सपत्नी के मध्य समन्वय का आदर्श प्रस्तुत किया है। तुलसी के राम जितने पितृभक्त थे, उतने ही मातृभक्त भी थे तथा माता-पिता भी राम के प्रति वैसी ही भक्ति रखते थे। इसी प्रकार वधुएँ जितना सम्मान अपनी सासों का करती थी, उतना ही स्नेह उन्हें प्रतिदानस्वरूप प्राप्त भी होता था। तुलसीदास जी ने अपने युग की राजनीतिक विश्रृंखलता को गहराई से अनुभव किया था। उन्होंने महसूस किया कि राजा संकीर्ण विचारधारा से युक्त और आत्मकेंद्रित होते जा रहे हैं। प्रजा के कल्याण की ओर उनका तनिक भी ध्यान नहीं है। राजा और प्रजा के बीच गहरी खाई बनती जा रही है। तुलसी ने यहाँ तक कहा कि जिस राजा के राज्य में प्रजा दुखी होती है वह राजा निश्चित रूप से नरक का अधिकारी होता है-

" जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी।।"

दार्शनिक मत-मतान्तरों के मध्य व्याप्त द्वेष को समाप्त करने के लिए तुलसी ने इनके मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया। उन्होंने द्वैत-अद्वैत, विद्या-अविद्या, माया और प्रकृति, जगतसत्य और असत्य, जीव का भेद अभेद, भाग्य एवं पुरुषार्थ तथा जीवनमुक्ति एवं विदेहमुक्ति जैसी दार्शनिक विचारधाराओं के बीच समन्वय स्थापित किया। उनके काव्य में जहाँ एक ओर भाषा का साहित्यिक सौंदर्य दृष्टिगत होता है, वही दूसरी ओर जनभाषा का भी अत्यंत सरस रूप दिखाई देता है। तुलसी पूर्णतया समन्वयवादी थे इसलिये उन्होंने अपने समय की तथा पूर्व प्रचलित सभी काव्य पद्धतियों को राममय करने का सफल प्रयास किया। सूफियों की दोहा-चौपाई पद्धति, चन्द के छप्पय और तोमर आदि, कबीर के दोहे और पद, रहीम के बरवै, गंग आदि की कवित्त-सवैया पद्धति को उन्होंने रामकाव्यमय कर दिया। इस प्रकार उन्होंने काव्य की प्रबंध एवं मुक्तक दोनों शैलियों को अपनाया। निष्कर्षतः तुलसी ने तत्कालीन संस्कृतियों, जातियों, धर्मावलंबियों के बीच समन्वय स्थापित करके दिशाहीन समाज को नई दिशा प्रदान की। समन्वय का यह भाव उनकी अनुभूति एवं अभिव्यक्ति में भी झलकता है। कवि की भाषा की सहजता, सरलता और उत्कट सम्प्रेषणीयता

मानवमूल्यों को जोड़ती है। तुलसी के काव्य में संस्कृत, अवधी, ब्रजभाषा आदि भाषाओं का सुंदर सामंजस्य मिलता है। लोक नायक तुलसी ने भारतीय जनता की नस-नस को पहचान कर ही 'रामचरितमानस' के द्वारा समन्वयवाद का अद्भुत आदर्श प्रस्तुत किया।

सुरेंद्र कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर

हिंदी विभागाध्यक्ष

सीख

रामकला ने अपनी बेटी को समझाते हुए कहा- "लाडो अपने ससुराल जाकर सारा काम संभाल लेना। अपने सास-ससुर को माता- पिता के समान समझकर उनकी सेवा करना। ननद को बड़ी बहन मानकर इज्जत देना। कभी भी गुस्सा मत करना। अगर कोई गलती हो जाए तो माफी मांग लेना। माफी मांगने से कोई छोटा नहीं होता बल्कि परिवार में उसकी इज्जत बढ़ती है। फिर देखना तू रानी की तरह राज करेगी। तुझे सभी सम्मान देंगे।" "परंतु मम्मी, भाभी भी तो यही सब करती है, जो आपने मुझे बताया। लेकिन भाभी तो रानी की तरह नहीं नौकरानी की तरह रहती है। आप हमेशा उसे दहेज न लाने के ताने मारती रहती हो। क्या वह किसी की लड़की नहीं है। मम्मी प्लीज अपनी दोगली मानसिकता को बदलो।" रामकला के पास निशा की बातों का कोई जवाब नहीं था।

डॉ. लाजवंती

एसोसिएट प्रोफेसर हिंदी



माननीय श्री लक्ष्मण सिंह यादव , विधायक कोसली एवं डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य Maths Lab का शुभारम्भ करते हुए

ई-कॉमर्स का व्यवसाय में महत्व

ई-कॉमर्स या इ-व्यवसाय इंटरनेट के माध्यम से व्यापार का संचालन है; न केवल खरीदना और बेचना, बल्कि ग्राहकों के लिये सेवाएं और व्यापार के भागीदारों के साथ सहयोग भी इसमें शामिल है। बुनियादी ढांचे, उपभोक्ता और मूल्य वर्धित प्रकार के व्यापारों के लिए इंटरनेट कई अवसर प्रस्तुत करता है। वर्तमान में कंप्यूटर, दूरसंचार और केबल टेलीविजन व्यवसायों में बड़े पैमाने पर विश्वव्यापी परिवर्तन हो रहे हैं। मूलतः इसका मुख्य कारण दुनिया भर के दूरसंचार नेटवर्कों पर जो नियंत्रण थे उनका हटाया जाना है। सन् 1990 से वाणिज्यिक उद्यमों ने विज्ञापन, बिक्री और दुनिया भर में अपने उत्पादनों के समर्थन के लिये इंटरनेट को एक संभावित व्यवहार्य साधन के रूप में देखा है। ऑनलाइन शॉपिंग नेटवर्क वाणिज्यिक गतिविधियों का एक बढ़ता प्रतिशत बन गया है। इक्कीस् वीं सदी ने ऑनलाइन व्यापारों के लिए असीम अवसर एवं प्रतिस्पर्धा का वातावरण प्रदान किया है। अनेक ऑनलाइन व्यापारिक कंपनियों की स्थापना हुई है और अनेक मौजूदा कंपनियां ऑनलाइन शाखाएं खोल रखी हैं।

आमतौर पर ई वाणिज्य या ई-कॉमर्स के रूप में जाना जाता है इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य, इंटरनेट जैसे कंप्यूटर नेटवर्क का उपयोग, उत्पादों या सेवाओं में कारोबार कर रहा है। इलेक्ट्रॉनिक वाणिज्य ऐसे मोबाइल कॉमर्स, इलेक्ट्रॉनिक धन हस्तांतरण, आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन, इंटरनेट विपणन, ऑनलाइन लेनदेन प्रसंस्करण, इलेक्ट्रॉनिक डाटा इंटरचेंज (ईडीआई), सूची प्रबंधन प्रणाली, और स्वचालित डेटा संग्रह प्रणाली के रूप में प्रौद्योगिकियों पर छोड़ता है। यह भी इस तरह के ई-मेल के रूप में अन्य तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं, आज के आधुनिक युग में ई-कॉमर्स ने व्यवसाय को दिन-दुगनी रात चौगुनी उन्नति करने का अवसर प्रदान किया। ई-कॉमर्स के कारण लोकल, राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय बाजार एक बिंदु पर आ गये हैं जिसमें किसी भी प्रकार का व्यवसायिक लेन-देन करना बहुत ही आसन हो गया है। ई-कॉमर्स के आगमन से बाजार भी ग्राहकोमुखी हो गये हैं। ई-कॉमर्स से आसानी से कोई भी व्यापारिक गतिविधि संचालित कि जा सकती है, और अपनी पसंद व रुचि के अनुसार माल खरीद और बेच सकते है। ई-कॉमर्स के कारण समय और धन कि बचत की जा सकती है।

आज के समय में ई-कॉमर्स के बिना व्यवसाय चलना बहुत ही मुश्किल होता जा रहा है। ई-कॉमर्स के द्वारा व्यवसाय को उन्नति के मार्ग पर ले जाया जा सकता है। वर्तमान में ई-कॉमर्स, व्यवसाय का अभिन्न अंग बनता जा रहा है।

ओम प्रकाश
असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग

भारतीय मुद्रा के वैश्वीकरण की संभावना

हर मुद्रा का प्रयोग कम से कम तीन कामों के लिए होता है :

1. मूल्य मापने के लिए
2. आदान प्रदान के लिए
3. मूल्य सहेजने के लिए।

एक वैश्विक मुद्रा ये सभी कार्य अंतरराष्ट्रीय स्तर पर करती है। कुछ विशेषज्ञों का कथन है कि अंतरराष्ट्रीय मुद्रा व वैश्विक मुद्रा अलग अलग है। किसी मुद्रा का प्रयोग उस देश की सीमाओं से पार करना ही अंतरराष्ट्रीय मुद्रा की पहचान है। इसके विपरित वैश्विक मुद्रा इस आधार पर आंकी जाती है कि विश्व अर्थव्यवस्था में उस मुद्रा का कितना योगदान है। इसके अलावा वो मुद्रा अंतरराष्ट्रीय मौद्रिक व्यवस्था को कितना प्रभावित करती है व कर सकती है। ऐतिहासिक दृष्टि से देखा जाए तो विभिन्न समयकाल में विभिन्न मुद्राओं ने वैश्विक मुद्रा की भूमिका निभाई है। सत्रहवीं शताब्दी में ज्यादातर व्यापारिक व वाणिज्यिक कार्यों का केंद्र यूरोप था, उस समय गिल्डर अंतरराष्ट्रीय मुद्रा की भूमिका निभाती थी। अठारहवीं शताब्दी में ज्यादातर व्यापारिक कार्यों का

केंद्र लंदन बन गया। इसके कारण ब्रिटिश पाउंड ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा की भूमिका निभाई। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अमेरिकन डॉलर वैश्विक मुद्रा बनकर उभरा। अमेरिकन डॉलर की भूमिका वैश्विक स्तर पर अब भी बनी हुई है। पिछले कुछ समय से इस विषय पर चर्चा हो रही है कि भविष्य में अमेरिकन डॉलर वैश्विक मुद्रा के रूप में कैसे भूमिका निभाएगा। इसके अलावा भविष्य में कौन कौन सी मुद्रा वैश्विक मुद्रा के रूप में उभर सकती हैं। कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि भविष्य में कुछ मुद्राओं का समूह अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के रूप में कार्य कर सकता है। भविष्य में अमेरिकन डॉलर के साथ यूरो, चाइनीज रॅन्मिन्बी, ब्राज़ीलियन रियाल व भारतीय रुपया, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के रूप में कार्य कर सकते हैं। ये सभी मुद्राएं अपने अपने क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के रूप में कार्य कर सकती हैं। तत्काल में भारतीय रुपया अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के रूप क्या भूमिका निभा रहा है, यह जानना भी अतिआवश्यक है। इसे अनुमान लगाया जा सकता है कि भविष्य में भारतीय रुपया अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के रूप में कितना प्रयोग किया जा सकता है। पहले ये देखा जा सकता है कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार में कीमत का मुद्रण भारतीय रुपया में कितना किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भारतीय रुपया में कीमत मुद्रण बहुत कम है। यहां तक कि जब व्यापार का एक पक्ष भारत हो तब भी कीमत का मुद्रण भारतीय मुद्रा में नहीं किया जाता। ये भी जांचा जा सकता है कि भारतीय मुद्रा का प्रयोग मूल्य संग्रहण के लिए कितना किया जाता है। इस आधार पर भी यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय मुद्रा का प्रयोग मूल्य संग्रहण के लिए बहुत कम किया जाता है। इसके अलावा ये देखा जा सकता है कि अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाज़ार में भारतीय रुपया क्या भूमिका निभाता है। अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाज़ार में भी भारतीय मुद्रा का प्रयोग बहुत कम है। विभिन्न देशों में किसी मुद्रा का प्रयोग लेन देन में कितना होता है, उससे भी उस मुद्रा के अंतरराष्ट्रीय महत्व का पता चलता है। भारतीय मुद्रा का प्रयोग लेन देन के लिए कुछ देशों जैसे नेपाल, बांग्लादेश, मॉरीशस व भूटान वगैरह में ही बहुत थोड़े स्तर पर होता है। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि विभिन्न बिंदुओं पर मापने के बाद यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय मुद्रा का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के रूप में बहुत कम स्तर पर होता है। यहां तक की भारत का भी अंतरराष्ट्रीय लेन देन व व्यापार अमेरिकन डॉलर वगैरह में होता है। अतः निकट भविष्य में भारतीय मुद्रा का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय मुद्रा के रूप में होने की संभावना बहुत कम है।

हकीकत

असिस्टेंट प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग



माननीय श्री लक्ष्मण सिंह यादव , विधायक कोसली एवं डॉ . सुधीर यादव, प्राचार्य Digital Language Lab का शुभारम्भ करते हुए

शिक्षा और संस्कार

शिक्षा जीवन का अनमोल उपहार है तथा संस्कार जीवन का सार, इन दोनों के बिना समस्त ऐश्वर्य के साधन, पद – प्रतिष्ठा, मान - मर्यादा सिर्फ अहंकार के सिवाय कुछ नहीं I शिक्षा में ही संस्कार समाए हुए हैं I यह एक ही सिक्के के दो पहलू हैं I मानव मानव में प्रेम, भाईचारा, सहयोग, एक दूसरे के सुख दुख में काम आने की भावना न हो तो शिक्षा महत्वहीन है I संस्कार किसी पेड़ पर नहीं लगते, इन्हें खरीदा और बेचा नहीं जा सकता, ये तो घर - परिवार, समाज, शिक्षकों, आसपास के परिवेश से अर्जित किए जाते हैं I ये बोलने और कहने से नहीं आते हैं सर्वप्रथम बालक जो घर में देखता है, सुनता है, उसी के अनुसार आचरण करता है I उसके पश्चात् वह गुरुजनों का अनुकरण करता है I अधिकांश घरों में बच्चे के रोने अथवा जिद करने पर मां उसे मोबाइल थमा देती है और स्वयं भी टीवी या मोबाइल की

दुनिया में गुम हो जाती है। पिता अपने काम में व्यस्त हो जाते हैं संयुक्त परिवार तो अब रह नहीं, ऐसी स्थिति में आज बच्चों से लेकर बड़ों तक की अपनी अलग दुनिया एक अलग जिंदगी है बच्चे क्या कर रहे हैं? यह सब जाने की किसी को फुर्सत ही कहां है? फिर कौन सिखाएं? कौन रोके - टोके मैं हूं ना की जगह स्कूल है ना। जब बच्चे अभिभावकों की प्रत्येक बात का उल्लंघन करने लगते हैं, मनमानी करने लगते हैं तब माता-पिता इसका दोस्त एक दूसरे पर मंढ कर इति श्री कर लेते हैं ऐसे अधिकांश बच्चे, जब विद्यालय जाते हैं तो वे शिक्षा के प्रति गंभीर नहीं रहते, जैसे - तैसे पास होना ही उनका उद्देश्य रह जाता है ऐसे छात्र न तो गुरु का आदर करते हैं और ना ही उनकी उदंडता पर विशेष ध्यान देते हैं। वर्तमान समय में छात्रों के दिमाग में ठूस - ठूसकर शिक्षा भरने का प्रयास किया जाता है। ज्ञानी होने का प्रमाण सिर्फ उनकी डिग्रियां है जबकि शिक्षा ज्ञान के साथ-साथ सभ्यता, संस्कृति आदि मानवीय मूल्यों से औत-प्रौत बालक का संपूर्ण विकास करने वाली होनी चाहिए। स्थान - स्थान पर शिक्षा की दुकानें खुल गई है जिसकी जितनी हैसियत है वह उस हिसाब से शिक्षा का क्रय - विक्रय होता रहता है। प्रतिवर्ष एक दिन शिक्षक दिवस मना कर हम अपने शिक्षकों के प्रति सम्मान की भावना का दिखावा करके प्रसन्न हो जाते हैं तत्पश्चात फिर वही बात। माता-पिता शिक्षक सभी को सतर्क कर गंभीरतापूर्वक शुरू से ही बालक को वह सब कुछ सिखाना होगा जिसकी हम उससे अपेक्षा करते हैं। हमें स्वयं भी घर परिवार में गुरुजनों को विद्यालय में महाविद्यालय में आदर्श प्रस्तुत करना होगा क्योंकि बच्चे होने का अनुसरण करते हैं गुरुजनों को स्वयं के आचरण में बदलाव के साथ अपने चरित्र को गिरने से बचा कर तन - मन से समर्पित होकर पुनः अपना आत्मसम्मान कायम करना होगा। अभिभावक और अध्यापक दोनों ही बालक के सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता देते हुए अपना उत्तरदायित्व निभाए। तभी हमारा घर - परिवार समाज और देश का भविष्य उन्नति करेगा।

डॉ. वंदना निषाल

असिस्टेंट प्रोफेसर रसायन विज्ञान

माँ

माँ वो होती है, जो हमें जीना सिखाती है
माँ वो होती है, जो हर दुख-सुख में हमारा साथ देती है
माँ वो होती है, जो हमें बुरे मार्ग पर चलने से रोकती है
माँ तो ममता का सागर होती है
माँ वो होती है, जो अपने बच्चे की खुशियों की खातिर
हर कष्ट, हर पीड़ा के को खुशी-खुशी झेलती है
मां प्रेम की साक्षात मूर्ति है
मां के बारे में मैं ज्यादा क्या बताऊं
उसकी अहमियत को तो वही पहचाने
जो या तो अपनी माँ से दूर हैं
या फिर जिनकी माँ नहीं होती
अरे जरा उनसे पूछो कि उनके लिए
माँ कितनी महत्व रखती है
क्योंकि बड़े बदनसीब होते हैं वह
जो माँ की कदर नहीं करते
या फिर जिनको मां का प्यार नहीं मिलता
मां तो करुणामयी होती है
वह खेल-खेल में प्यार से अपने बच्चे को
सदैव सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है

त्रिदेव

असिस्टेंट प्रोफेसर गणित

शिशुआर की बरतें

चौखी संगत में उठणो बैठणो
काम सै काम करणो (राखणो-)
ऊडतौ तीर नहीं पकडणों
घणो लालच नहीं करणो
सोच समझकर पाग राखणो
रास्ते आणो रास्ते जाणो
जितणो हो सके उतणों कम बोलणो
छोटा बड़ा को काण कायदो राखणो
जितो पचै उतो ही खाणों, पेट तो थारो ही सै
बिना पुच्छ्या सलाह नहीं देणी
पराई पंचायती नहीं करणी
आटे में लुण समावै, लुण में आटो नहीं
पगा बलती देखणो डूंगर बलती नहीं
बीच में ही लाडो की भुवा नहीं बनणी
सुनणी सबकी करणी अपने मन की
मानो तो थारी मर्जी, ना मानो तो थारी मर्जी।

संदीप यादव

एक्सटेंशन लेक्चरर रसायन विज्ञान

बच्चे

'बूढा पिता यह सोचता रह गया कि सुबह मेरी तबीयत खराब थी लेकिन बेटे ने मेरे बारे में पूछा भी नहीं। आया और सीधे ऊपर अपने कमरे में चला गया। शायद काम की अधिकता के कारण ध्यान नहीं रहा होगा।' बेटा मेरा चश्मा ले आया क्या? सुबह टहलने के लिए बहुत दिक्कत होती है। कई बार रास्ता भटक जाता हूं। बूढ़े पिता ने सुबह नाश्ते के समय बेटे से पूछा। नहीं बाबूजी आज भी समय नहीं लग पाया। ऑफिस में बहुत काम था और आपके लाडले के वीडियो गेम में ही सारा समय लग गया। बेटा रोहित मैं तुम्हारा वीडियो गेम ले आया हूं। आओ इसे चलाकर देखेंगे। नहीं पापा मुझे नहीं चाहिए वीडियो गेम। इसे वापस देकर आओ और दादा जी के लिए चश्मे लेकर आओ। अभी बाजार जाओ पापा, नहीं तो मैं आपसे कभी बात नहीं करूंगा।' राकेश बाजार के लिए निकल पड़ा और सोच रहा था कि हमसे अच्छे तो यह बच्चे हैं, जो बुजुर्गों का कितना ख्याल रखते हैं। मेरे बेटे ने मेरी आंखें खोल दी।

जसवंत जाखड़
असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान



डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य Drug De Addiction जागरूकता रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना करते हुए

हिग्स बोसॉन, ईश्वर कण

जब हमारा ब्रह्मांड अस्तित्व में आया उससे पहले सब कुछ अंतराल में तैर रहा था, किसी चीज का तय द्रव्यमान नहीं था | जब हिग्स बोसोन भारी ऊर्जा लेकर आया तो सभी कण उसकी वजह से आपस में जुड़ने लगे और उनमें द्रव्यमान पैदा हो गया | वैज्ञानिकों का मानना है कि हिग्स बोसोन की वजह से ही आकाशगंगाएँ, ग्रह तारे और उपग्रह बने |

हिग्स बोसोन बहुत ही अस्थिर कण है, वह इतना क्षणभंगुर था कि वह बिग बैंग (महाविस्फोट) के समय एक पल के लिए आया और सारी चीजों का द्रव्यमान लेकर क्षय हो गया । इस ईश्वर कण या हिग्स बोसोन की खोज करने के लिए CERN में महाप्रयोग चल रहा है । विशाल हैड्रन कोलाइडर में कणों को प्रकाश की गति से टकराया गया है जिससे वैसे ही स्थिति उत्पन्न हुई जैसे सृष्टि की उत्पत्ति से ठीक पहले बिग बैंग की घटना के समय थी । 27 किलोमीटर लंबी सुरंग में अति आधुनिक उपकरण लगाए गए हैं इस सुरंग में प्रोटॉनों को दो विपरीत दिशाओं में प्रकाश की गति से दौड़ाया गया । वैज्ञानिकों के अनुसार प्रोटोन कणों ने एक सेकंड में 27 किलोमीटर लंबी सुरंग के 11 हजार से भी अधिक चक्कर काटे । इसी प्रक्रिया में प्रोटॉन विशेष स्थानों पर आपस में टकराए और ऊर्जा पैदा हुई । इस टकराव से जुड़े वैज्ञानिक विवरण विशेष निरीक्षण बिंदुओं पर लगे विशेष उपकरणों ने दर्ज किए । अब उन्हीं आंकड़ों का गहन वैज्ञानिक विश्लेषण किया जा रहा है ।

वज्ञानिकों का मानना है कि प्रकृति और विज्ञान की हमारी आज की जो समझ है उसके सभी पहलुओं की वैज्ञानिक पुष्टि हो चुकी है । हमें पता है कि आज सृष्टि का निर्माण किस तरह हुआ लेकिन उसमें एक कड़ी अधूरी है 'हिग्स बोसोन' । हम उसे पकड़ने की कगार पर पहुँच चुके हैं । हम उसे ढूढ़ रहे हैं । लेकिन समय लग सकता है अगर हमें ईश्वर कण मिल गया तो साबित हो जाएगा कि भौतिकी विज्ञान सही दिशा में काम कर रहा है

डॉ. जसमेर सिंह अहलावत
एक्सटेंसन लेक्चरर भौतिक विज्ञान

“ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ ”

आज हमारे देश की बेटियाँ हर मुकाम पर सफलता प्राप्त कर रही हैं। चाहे वह राजनीति, खेल या अंतरिक्ष ही क्यों न हो। देश की उन्नति और विकास में बेटियाँ अपना पूर्ण योगदान दे रही हैं।

परन्तु आज भी बेटियों को बेटों के समान दर्जा नहीं दिया जाता। इसे एक सामाजिक दोष तथा विकृत परम्परा ही कहा जाएगा कि बेटे और बेटी में भेदभाव किया जाता है। यह अंतर इस हद तक व्याप्त है कि परिवार में लड़के के जन्म पर खुशियाँ छा जाती हैं जबकि कन्या का जन्म परिवार का बोझ समझा जाने लगा है।

पुत्र प्राप्ति की इच्छा ने लोगों की सोच को इस तरह जकड़ा हुआ है कि वे कन्या भ्रूण हत्या करने से भी नहीं कतराते। धार्मिक विश्वास के अनुसार पुत्र ही वंश चलाता है। पिता की मृत्यु के बाद ही उत्तराधिकारी बनता है।

ये परिणाम महिलाओं का घटते लिंग अनुपात में देख सकते हैं। महिलाओं का लिंग अनुपात पुरुषों की तुलना में बहुत ही कम है। इसका परिणाम है कि आज बेटियों के संरक्षण की आवश्यकता पड़ रही है।

आज के समय में बेटियों के साथ होने वाले हर अपराध का केवल एक ही कारण है, लोगों की गलत मानसिकता। यदि मेरी तरह हर बहने शिक्षित होगी तो वह आत्मनिर्भर, साहसी, निडर होगी।

मैं इस निबंध के माध्यम से बस एक छोटी सी उम्मीद करती हूँ कि इस निबंध के बाद बेटियों की भ्रूणहत्या न करके उन्हें बचाएं और पढ़ाएं।

“ पिता के कर्जों को उतारूंगी मैं
माँ की खुशियाँ को उभारूंगी मैं ।”

दिव्या कुमारी

स्नातक प्रथम वर्ष

औरत

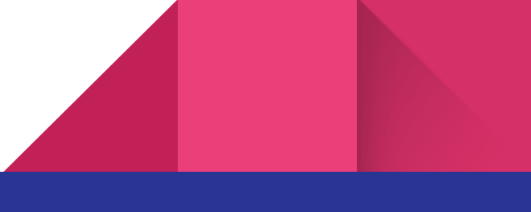
या तो गृहलक्ष्मी कहा, या फिर पग की धूल,
इन दोनों की बात में, मुर्दों ने की भूल।
जिस नारी के सामने झुके कभी यमराज,
हर पल नर के सामने झुकती है वह आज।

कभी अहल्या रूप धर, बन बैठी पाषाण,
कभी जानकी बन किया, अग्नि का आह्वान।
छाँव बन चलती रही, सहती रही अभाव,
औरत तेरे भाग्य का कब होगा बदलाव।

मैंने दूँढा हर कहीं, हर बस्ती हर गाँव,
तेरे आँचल सी कहीं, मुझको मिली न छाँव।
बहू बन फुंकती धूल में, जलता रहा शरीर,
सास ननद के बोल ने, दिया कलेजा चीर।

सोनिया

बी.एस.सी प्रथम वर्ष



माँ

दीया बनकर आप जले
न जाने कितने संघर्ष करके,
मुझे काबिल बनाया आपने।

हर वक्त जोखिम को सह करके,
खुशियों का दामन थमाया आपने।

जरा भी महसूस हुई जरा सी थकन,
कंधों पर अपने बिठाया आपने।

मैंने मार लिया हर एक मैदान,
विश्वास जो था, जताया आपने।

दीया बन-बन कर जलते रहे आप,
हर वक्त जो प्रकाश लुटाया आपने।

हर जगह मान मिलता रहे मुझे,
ऐसा आचार विचार सिखाया आपने।

मुझ अबोध को भी जीवन बोध हो पाया,
जीवन उद्घोष समझाया आपने।

अपनी सामर्थ्य से मोड़ दूँ रुख तूफान का,
ऐसा बलवान है बनाया आपने।

आजीवन न चूक सकेगा आचार आपका,
मुझ नादान को इंसान बनाया आपने।

दीया बनकर आप जलते रहे,
अपने प्यार से मुझे मार्ग दिखाया आपने।

नीतू
बी एस सी प्रथम वर्ष

वीरों की गाथा

ठक-ठक-ठक फौजी हैं चलते,
फौजी जब चलते दुश्मन हैं डरते।
हम तो मनाते हैं दीवाली और होली,
ये रंगे खून में, खाते सीने पर गोली।

जख्म खाकर भी ये नहीं थकते,
पर पीछे से वार भी ये नहीं करते।
दुश्मन भी छिपते या दर - दर भागते,
जब फौजी है कंधे से कंधा मिलाकर चलते।

सरहद की रक्षा में ये बिताते उम्र तमाम,
ऐ लोगों मत करो, इनका नाम बदनाम।
ये करते सबकी रक्षा, तुम करो इन्हें सलाम,
हमेशा रखते हैं ये ऊँचा अपने देश का नाम।

ऐ आतंकियो, छोड़ दो अब आतंक फैलाना,
अपने कामों से देशवासियों को डराना।
चाहता हूँ तुम्हें यह बात समझाना,
भूलकर भी भारतीय सेना से न टकराना।।

अंजली
बी.एस.सी

किस्मत पर विजय

ऋतु ने अपना 7वाँ जन्मदिन मनाया है। वह और उसके माता-पिता अत्यंत खुश हैं। ऋतु एक नहीं सी प्यारी, चंचल और सरल स्वभाव की बच्ची है, वह तीसरी कक्षा में पढ़ती हैं। वह सबकी प्यारी है। विद्यालय में वह सभी अध्यापकों का सम्मान करती है और उसकी कक्षा के विद्यार्थी उसका साथ पसंद करते हैं। ऋतु पढाई में और खेलों में प्रथम स्थान पर रहती है। ऋतु टेलीविजन पर अक्सर फौज के जवानों को देखती थी। वह उसके पिता के साथ भी न्यूज़ पर उनको देखती थी। इससे ऋतु के मन में फौजी बनने की बात घर कर जाती है और यह उसका सपना बन जाता है। ऋतु अपने माता-पिता से भी अक्सर इसी विषय पर बातें करती रहती है। उसके माता-पिता उसे प्रोत्साहित करते रहते हैं। ये छोटा सा परिवार इस प्रकार प्रसन्नता से अपना जीवन जीता है | उसके पापा एक ट्रांसपोर्ट कम्पनी में मैनेजर हैं और अक्सर कम्पनी में ही रहते हैं | परन्तु कहते हैं न की खुशियाँ किसी के जीवन में स्थाई नहीं रहती हैं।- एक दिन विद्यालय में महाशिवरात्रि के अवसर पर दो दिन का अवकाश घोषित किया जाता है और यह सुन ऋतु अत्यंत खुश हो जाती है | क्योंकि ऋतु के मामा जी घर आये हुए थे। ऋतु को उनके साथ खेलना अत्यंत पसंद था। अब ऋतु का अवकाश था तो वह आराम से अपने मामा जी के साथ खेल सकती थी। ऋतु उत्साहित थी और वह जल्द से जल्द यह खुशखबरी अपनी मम्मी को देना चाहती थी। ऋतु स्कूल बस से उतरकर सीधा घर की तरफ दौड़ने लगी | ऋतु का घर सड़क के दाईं ओर था और बस बाईं ओर थी | जैसे ही ऋतु सड़क पार करने लगी , एक तेज गति से आते हुए ट्रक ने ऋतु को टक्कर मारी और उसके ऊपर से निकल गया। नन्हीं ऋतु खून से लथपथ सड़क पर पड़ी थी। आस-पास भीड़ जमा हो गई परन्तु किसी ने उसे उठाकर अस्पताल ले जाने का साहस नहीं किया। सड़क पर जमा भीड़ को देखकर ऋतु के मम्मी और मामा दौड़ कर आते हैं और रितु की ऐसी हालत देखकर उसकी मम्मी वहीं पर बेसुध हो जाती है | ऋतु के मामा जी उसे जल्द से जल्द अस्पताल पहुंचाते हैं और डॉक्टर ऋतु की हालत देखकर जवाब दे देते हैं। उसे जल्द से जल्द बड़े शहर के अस्पताल में पहुंचाते हैं। वहां पर ऋतु का इलाज चलता है | फिर से काफी खून बह चुका था और इलाज के बाद डॉक्टर बताते हैं कि ऋतु के सिर पर गहरी चोट लगने के कारण कोमा में जा चुकी है | यह सुन ऋतु के माता-पिता के तो मानो प्राण निकल जाते

हैं। भगवान से प्रार्थना करते रहते हैं और उनकी आंखें सदा नम रहती है। उसके माता पिता ICU में लेटी ऋतु को देखकर बस यही सोचते थे कि अब हमारी बेटी उठेगी और दौड़ कर हमारे गले लग जाएगी। यह सोचते थे कि नहीं ऋतु अभी उठ कर बैठ जाएगी और उनसे अपनी चंचलता भरी बातें करेगी। वह एक मुस्कान देखने को तरस रहे थे।- पर कहते हैं ना “ भगवान के घर देर है अंधेर नहीं ” ऋतु को महीने भर बाद होश आता है । ऋतु देख सकती है , सुन सकती है पर कुछ बोल नहीं सकती । न ही अपने शरीर के अंगों को हिला सकती है। ऋतु की आवाज जा चुकी थी। परंतु धीरे-धीरे ऋतु के साथ साथ उसके माता-पिता के सहयोग और प्रार्थना से ऋतु की आवाज वापिस आती है। उस समय मुंह से निकला शब्द “मम्मी” उसके माता-पिता में मानों प्राण ला देता है। अब ऋतु को उठकर चलने का अभ्यास कराया जाता है। इन प्रयासों के बाद ऋतु चल तो पाती है परंतु वह अपने शरीर के दाएं भाग में अभी भी कुछ महसूस नहीं कर पाती । ऋतु के पिता उसे बड़े से बड़े डॉक्टर के पास ले जाते हैं परंतु सभी जवाब में यही कहते हैं कि उम्र के साथ-साथ सब ठीक हो जाएगा। अब 5 महीने बीत चुके थे ऋतु के एग्जाम भी अब 15 दिन बाद शुरू होने वाले थे । ऋतु अभी भी अपने हाथ से पेंसिल नहीं पकड़ सकती थी परंतु वह परीक्षा देना चाहती थी । वह दोबारा अपने मित्रों से मिलना चाहती थी। ऋतु के माता-पिता उसे ऐसी हालत में स्कूल भेजने को तैयार नहीं थे। वे उसे बहुत समझाते हैं , पर बच्चों की जिद के आगे माता-पिता को झुकना ही पड़ता है ।ऋतु को उसके बड़े भाई रोहन के साथ स्कूल भेज दिया गया। ऋतु अपने मित्रों से बहुत सी बातें करना चाहती थी। पर ऋतु की हालत के कारण बच्चे उससे दूर रहते थे। उसके उपेक्षा करते थे । ऐसे ही परीक्षा का दिन भी आ गया। वह स्कूल में अपने बड़े भाई रोहन के साथ पहुंची और रोहन ने उसका पेपर लिखा और उसने उत्तर बोल-बोलकर बताये । ये कुछ इस प्रकार था की दिमाग तो ऋतु का था पर रोहन के हाथ उसके हाथ बने । खैर, परीक्षा में पास हो गई और ऐसी ही हालत में बड़ी हुई पर उसने धीरे-धीरे से अपने बाए हाथ से लिखना सीख लिया था।ऋतु जीवन की परेशानियों को पार करते हुए अब 18 साल की हो गई थी। उसके जीवन में अब बदलाव आ गया था। हंसती खेलती ऋतु अब चुप रहती थी, उसकी चंचलता मानों गायब हो गई थी। लोगों से मिलना अब बंद

हो चुका था। ऋतु के माता-पिता उसको लेकर अक्सर चिंतित रहते थे। फौज के बारे में सुनकर उसकी आँखों में आंसु आ जाते थे क्योंकि उसकी शारीरिक असमर्थता के कारण उसका सपना टूट गया था। एक दिन ऋतु के पिता ने शाम को कम्पनी से आने के बाद उसे अपने पास बुलाया और उसे एक कहानी सुनाई और यह थी एक IAS अधिकारी की कहानी। ऋतु ने कभी भी IAS के बारे में नहीं सुना था और न ही कभी देखा था। ऋतु इससे प्रभावित हुई और उस रात वह इस कहानी की नायिका के विषय में सोचती रही “इस कहानी की नायिका IAS “ईरा सिंघल” थी। जो अपने जीवन में अनेक कठिनायों को पार करते हुए कामयाब हुई थी”। ऋतु सारी रात इस विषय पर सोचती रही और जब सुबह उसके पापा ऑफिस के लिए तैयार होकर नाश्ता करने के लिए टेबल पर आये तो ऋतु बिना बुलाए अपने कमरे से नीचे आई और आकर नाश्ते के लिए बैठ गई। यह देख उसके माता-पिता हैरान हो गए क्योंकि ऐसा पहली बार हो रहा था कि नाश्ते के दौरान ऋतु ने अपने पापा से IAS के बारे में पूछा। उसने पूछा की क्या वह भी IAS बन सकती हैं? क्या इसमें उसकी शारीरिक असमर्थता रुकावट नहीं देगी? इस पर ऋतु के माता-पिता हैरानी से एक-दुसरे की तरफ़ देखने लगे

पापा ने बताया कि इसके लिए बहुत अधिक पढ़ना पड़ता है। मेहनत करनी पड़ती है। इसमें सारा काम दिमाग का होता है। इसलिए शारीरिक असमर्थता कोई मायने नहीं रखती। इन बातों से ऋतु के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। मानों उसे जीने की एक नई राह मिल गई थी। उस दिन से ऋतु ने कड़ा परिश्रम करना शुरू किया और अपनी लग्न और मेहनत के बल पर इस परीक्षा में उत्तीर्ण हुई। ऋतु के माता-पिता, भाई अत्यंत खुश हुए। ऋतु अपने ही जिले की DM बनी और सच्ची निष्ठा व ईमानदारी से लोगों की सेवा की। इस तरह ऋतु ने अपनी किस्मत पर विजय प्राप्त की।

चंचल चौहान
स्नातक द्वितीय वर्ष



माननीय श्री लक्ष्मण सिंह यादव , विधायक कोसली एवं डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य ' The Wall of Heroes' का प्रतिष्ठापन करते हुए



डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य एवं स्टाफ सदस्य वन महोत्सव के दौरान पौधारोपण करते हुए

चलना हमारा काम है
गति प्रबल पैरों में भरी,
फिर क्यों रहा दर दर खड़ा।
जब आज मेरे सपने,
है रास्ता इतना बड़ा।
जब तक न मंजिल पा सकूं,
तब तक न मुझे विराम है,
चलना हमारा काम है।।

कुछ कह दिया, कुछ सुन लिया,
कुछ बोझ अपना बँट गया।
अच्छा हुआ तुम मिल गई,
कुछ रास्ता ही कट गया।
क्या राह में परिचय कहूँ,
राही हमारा नाम है,
चलना हमारा काम है।

जीवन अपूर्ण लिए हुए,
पाता कभी खोता कभी।
आशा निराशा से घिरा,
हंसता कभी रोता कभी।
गति-मती न हो अवरुद्ध,
इसका धाम आठों-याम है।
मैं पूर्णता की खोज में,
दर-दर भटकता रहा।
प्रत्येक पग पर कुछ-न-कुछ,
रोड़ा अटकता ही रहा।
निराशा क्यों? मुझे
जीवन इसी काम नाम है,
चलना हमारा काम है।


कोमल, बी.कॉम. अंतिम वर्ष

बेटी होना गलत है क्या ?

आखिर क्या गलती थी उसकी,
जो वह जग में ना आ पाई।
क्यों आने से पहले ही,
उसको दे दी विदाई।
उसको भी एक हक था जीने का,
उसने भी एक माँ थी पाई।
क्रूर स्वार्थी की बेड़ी पर,
क्यों बलि उसकी गई चढाई।
जग में उसको भेजा था रब ने,
उसको भी मिलना था भाई।
उसको भी मिलने थे रिश्ते,
पर सम्मुख आ गये कसाई।
अपनी करतूतों पर ऐ मानव,
क्यों तुझे शर्म भी न आई।
खिलवाड़ नहीं कर जीवन से,
क्योंकि तुझमे नहीं खुदाई।

रोनक

स्नातक प्रथम वर्ष




हाँ मैं जल हूँ

हाँ मैं जल हूँ,
मैं बड़ा ही चंचल हूँ
तुम संभालोगे तो कल हूँ,
हाँ मैं जल हूँ
मैं प्यासों को पास बुलाता हूँ,
हाँ मैं सबकी प्यास बुझाता हूँ
मानवता है मेरा धर्म,
केवल बहना मेरा कर्म
तुम संभालोगे तो कल हूँ,
हाँ मैं जल हूँ
वृक्षों को मैं जीवन देता हूँ,
धरती को सावन देता हूँ
भेदभाव ना मैं अपनाता हूँ,
तुम संभालोगे तो कल हूँ, हाँ मैं जल हूँ
इस धरती पर जीवन का तल हूँ,
मैं बड़ा ही शीतल हूँ
तुम संभालोगे तो कल हूँ, हाँ मैं जल हूँ

मनीषा

बी कॉम द्वितीय वर्ष



पैसा


जिन्दगी में जीना तो सभी को आता है
लेकिन क्या है वो चीज जो सबको भाता है
आज की दुनिया में कौन किसको समझ पाता हैं
एक इंसान दूसरे इंसान को केवल मतलब के लिए चाहता है

जिन्दगी में एक इंसान आता है तो दूसरा चला जाता है
कौन कितना अच्छा रिश्ता बनाता है
बस मतलब के लिए हर रिश्ता निभाता है
पैसा ही सबको अपने पीछे चलाता है

बाप है कि बेटे को जहाँ का हर सुख दिलाता है
और बेटा है कि बाप को बात-बात पर रुलाता है
पैसा ही है वो चीज, जो गैरों को भी अपना बनाता है
पैसा ही है जो सगे रिश्तों के बीच फासला बढ़ाता है

मनीषा

बी कॉम द्वितीय वर्ष



बीती यादें


ऐसा नहीं की ये जिन्दगी बुरी है
पर स्कूल और कॉलेज की बात ही कुछ और थी,
ऐसा नहीं है कि अब हँसी नहीं आती
पर दोस्तों में बैठकर खिलखिलाने,
वाली बात ही कुछ और थी
ऐसा नहीं है कि टेंशन से रात नहीं गुजरती,
पर एग्जाम की रातों में जागने की बात ही कुछ और थी
ऐसा नहीं कि आगे आकर,
कुछ हासिल न किया हो
पर पासिंग मार्क्स लेकर
पार्टी उड़ाने वाली बात ही कुछ और थी
ऐसा नहीं कि अब लोगों को
जानते पहचानते नहीं
पर वो दूर से “शरारती रुक” बोलने की
बात ही कुछ और थी
ऐसा नहीं की अब टिफ़िन शेयर नहीं करते
पर कैंटीन में किसी और
प्लेट से छीन के खाने की
बात ही कुछ और थी
ऐसा नहीं की अब जिन्दगी नहीं कट रही
पर दोस्तों में जिन्दगी जीने की बात ही कुछ और थी

अंजली
स्नातक प्रथम वर्ष

आतंकवाद

लोगों की चीख और जलती हुई आग
नष्ट कर देती है, कर देती है बर्बाद
सोचो क्या होता है ऐसे हमले के बाद
किसी माँ का बेटा घर लौटकर नहीं आता
कोई बच्चा अनाथ हो जाता
कोई विकलांग हो जाता
तो किसी का घर जल जाता है
थक गये हैं देखकर यह हमले बार-बार
जब पढ़ते है 14 फरवरी की सुबह का अखबार
नेता मिलते है करने को विचार
पर कुछ नहीं करती है, ये सरकार
कब खत्म होगा आतंकवाद
जिसकी हाय, सुनाई देती हँसी आज
पुलवामा में शहीद हुए जवानों को
मेरा शत-शत सलाम

रोहित यादव
स्नातक प्रथम वर्ष



मेरी लाइफ मेरे रूल

मैंने अपनी जिन्दगी में कुछ नये नियम बनाए है

आशा करती हूँ यह बात सबको समझ आ जाए

जो पचता नहीं है वो नहीं खायेंगे

जहाँ कद्र नहीं वहां नहीं जायेंगे

मेरी लाइफ मेरे रूल सबको समझायेंगे

जो हमें सुनना चाहे,उनको सुनायेंगे

जो हमें देखना भी पसंद न करें,उनके सामने न आएं

एक बात सीखी है जिन्दगी में, अकेला चलना है

तो खुद - ही - खुद का साथ निभाएं

मेरी लाइफ मेरे रूल सबको समझाएंगे

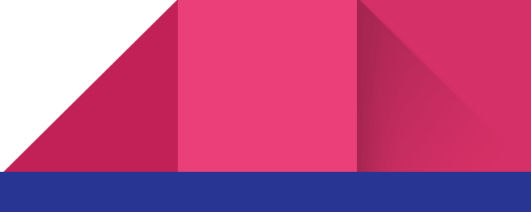
ना रखेंगे किसी से कोई उम्मीद

ना किसी से कोई आस लगाएंगे

आजकल खामोशी लगती है अच्छी

ना दोबारा खिल-खिलाकर हंसते नजर आएंगे

मेरी लाइफ मेरे रूल सबको समझाएंगे



समय का चक्र यूँ ही चलता रहेगा अपनी चाल
न जाने कभी वो वक्त बदलकर आएंगे
सूर्य निकलकर सुबह, शाम को छिप जाता है
बस इसी तरह हम भी एक दिन गुजर जाएंगे
मेरी लाइफ मेरे रूल सबको समझाएंगे
फिर लोगों को आएगा याद कि इंसान ये अच्छा था
मरने के बाद सब मेरे अच्छे-अच्छे गुण गाएंगे
थोडा हंसेंगे थोडा रोएंगे, और बस दिन गुजर जाएंगे
मजबूत बन जिन्दगी की
कठिन डगर पार कर जाएंगे
मेरी लाइफ मेरे रूल सबको समझाएंगे

मोहिनी
स्नातक तृतीय वर्ष



डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य ; विश्वविद्यालय बास्केट बॉल चैपियनशिप विजेता टीम के साथ

आज मुझे भी थोड़ा जानो ना

आज मुझे भी थोड़ा जानो ना

बेटी हूँ यूँ कहकर पराया मानो ना

एक बेटी रानी लक्ष्मीबाई भी थी

मुझे भी उनसे कम जानो ना

बेटी हूँ यूँ कहकर पराया मानो ना

आज मुझे भी थोड़ा जानो ना

एक बेटी कल्पना चावला भी थी

मुझे भी आसमान को छूना है ना
मुझे भी सपना पूरा करना है ना
परिवार का नाम रोशन करना है ना
बेटी हूँ यूँ कहकर पराया मानो ना
आज मुझे भी थोडा जानो ना
एक बेटी साईना भी थी
मुझे भी तो खेलना है ना
मुझे भी देश का नाम रोशन करना है ना
मुझे भी आगे बढना है ना
बेटी हूँ यूँ कहकर पराया मानो ना
आज मुझे भी थोडा जानो ना,
एक बेटी लता मंगेशकर भी थी
जिनकी आवाज़ की दुनिया दीवानी थी
मुझे भी तो संगीतकार बनना है ना
मुझे भी अपनी पहचान बनानी है ना
बेटी हूँ यूँ कहकर पराया मानो ना
आज मुझे भी थोडा जानो ना

खुशबू चौहान
स्नातक द्वितीय वर्ष



डॉ. सुधीर यादव, प्राचार्य विद्यालय बास्केट बॉल चैंपियनशिप विजेता टीम के साथ

माँ

एक अस्तित्व, जिसने पहचान बना दिया

मुझे इस दुनिया से मिलने का, जो नेक काम कर दिया

खुद तप कर, सह कर इंसान बना दिया

एक नेक इंसान, जो इस संसार में बना दिया

हूँ कर्जवान, जो सही-गलत में फर्क बता दिया

कैसे भूँ, मुझे इस संसार में सर्वोच्च बना दिया

एक अस्तित्व, जिसने पहचान बना दिया

शाम ढली, तो सुबह से रूबरू करा दिया

दिन की शुरुआत रब से करो, यह भी बतला दिया

है अहसान बहुत मुझ पर ए माँ तेरे

जो एक निर्जीव से सजीव बना दिया

प्राण डाल मेरे अंदर, मुझे जीवंत बना दिया

मेरे अंदर ज्ञान की लौ जलाकर, मुझे आबाद बना दिया


एक अस्तित्व, जिसने पहचान बना दिया

मैं कलम चलाती थी आड़ी - टेढ़ी

मुझे लिखना सिखा दिया

गम से दूर ले जा, खुशी से मिला दिया

दर्द सह कर, पालन - पोषण जो किया



इतना संभलकर, अब तक बड़ा जो किया

कैसे नमन करूँ उस माँ को

जिसने मुझे एक अच्छा इंसान बना दिया

एक अस्तित्व, जिसने पहचान बना दिया

महक यादव

स्नातक तृतीय वर्ष

नया जमाना

इब तो नहा धौके भाई कॉलेज के मै जाणा सै

पहले तो भाई गाय नै चारा फेर ऊँट नै पाणी पिलाणा सै

पहले थी भाई रोट राबड़ी इब घी नै बुरी बतावै सै

चंगेरी हुई खत्म रोटी भी होटकेस मै आवै सै


सारे आसण और प्रणायाम रामदेव करवावै सै

भोली बातें समाज की यादें और नहीं दोहरा सकता

अच्छी लागै तो अपनाओ आर.एल.बी. घर-घर तो नहीं जा सकता

रजत लाल बहादुर

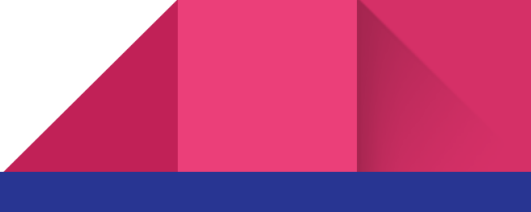
बी.कॉम. तृतीय वर्ष



क्या पूछूं मेरा भारत महान नहीं है

सबसे पहले उगे सूर्य, भारत को प्रणाम करे
हिम से निकली माँ का, ऋषि मुनि सब ध्यान धरे
प्रकृति की घटा निराली, धरती कहीं सुनसान नहीं है
कौन कहे मैं सबसे पूछूं मेरा भारत महान नहीं है
इसी देश के वीरों ने दुश्मन मार भगाया था
कुरुक्षेत्र में श्रीकृष्ण ने गीता उपदेश सुनाया था
सबसे ऊपर रहे तिरंगा, इसके जैसी शान नहीं
कौन कहे मैं सबसे पूछूं मेरा भारत महान नहीं है
जगत गुरु का नाम मिला है और जयहिंद का नारा है
हर नर-नारी यही कहता है, ये संसार हमारा है
इस भारत भू का गुण गाले हम, फिर कोई गुणगान नहीं है
कौन कहे मैं सबसे पूछूं मेरा भारत महान नहीं है
ऐसे भारत में जन्म लिया, इस बात में हम गर्वते हैं
उस जननी माँ और जन्म भूमि को शत-शत शीश झुकाते हैं
'शर्मा'भारत में जन्म मिले फिर, क्या हर दिल का अरमान नहीं है
कौन कहे मैं सबसे पूछूं मेरा भारत महान नहीं है।

पिंकी शर्मा , बी.एस सी. प्रथम वर्ष



ENGLISH SECTION



From Editor's Pen

In the world's broad field of battle,

In the bivouac of Life,

Be not like dumb, driven cattle!

Be a hero in the strife!

(Henry Longfellow)

Greetings and a very warm welcome to you all!

It gives me immeasurable pleasure and pride to pen a few words as prologue to the English Section of the first issue of this college magazine entitled as 'Kaushal Nidhi'. The English section of the magazine unfolds an array of various compositions contributed by the students and the faculty members of the college. The magazine is exclusively meant for churning out the latent writing talent which bears immense potentiality of sharpening the communication skills of the students. It takes a stroll down the memory lane of the students and comes out with their college experiences in the form of different articles. The magazine offers a panorama of the varied views and ideas of the students which represent the thoughts of new generation. It is the outcome of positive thought and healthy mindset of the youth of this college showcasing their unparalleled creativity energy. The magazine is also an attempt to provide a fertile land for the growth of literary sprouts which will grow up to bring social change and social upliftment by means of their literary creations. I hope this venture of ours will carve a special niche in the hearts of the readers.

"Reading makes a full man; conference a ready man; and writing an exact man" Francis Bacon

Enjoy Reading!

Manjeet Singh

Editor, English Section



Relationship Between Oil Prices and Inflation

Crude oil is a major economic input, so a rise in oil prices contributes to inflation, which measures the overall rate of price increases across the economy.

Inflation as measured by the annual gain in the India Consumer Price Index (CPI) set a 40-year high in March 2022 amid COVID-19 supply disruptions. Crude oil prices were the highest in a decade as the U.S. and its allies-imposed sanctions on Russia due to its invasion of Ukraine.

- Higher oil prices contribute to inflation directly and by increasing the cost of inputs.
- There was a strong correlation between inflation and oil prices during the 1970s.
- Oil prices exert a greater influence on producer prices because of oil's role as a key input.
- Some argue that costly renewable energy could re-strengthen the correlation between energy costs and a higher inflation rate.

Cause and Effect

Energy accounted for about 7.3% of the CPI as of December 2021, including the index weighting of about 4% for energy commodities.

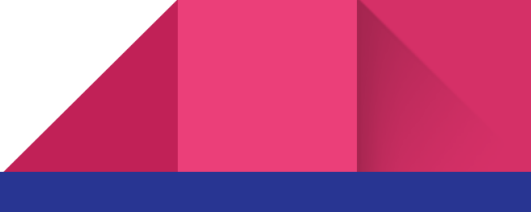
In addition to that direct effect on inflation, higher oil prices raise inflation indirectly because crude oil is a key ingredient in petrochemicals used to make plastic. So, more expensive oil will tend to increase the prices of many products made with plastic.

Similarly, consumer prices factor in transportation costs, including fuel prices, and the cost of oil accounts for roughly half of the retail price of gasoline.

The indirect contributions of crude oil prices to inflation are reflected in the core CPI index, which does not include energy or food prices because they tend to be more volatile.

Goods Producers Pay the Price

Historically, oil prices have exerted more influence on the Producer Price Index (PPI), which measures the prices of goods at the wholesale level, than the CPI, which measures the prices consumers pay for goods and services.



Between 1970 and 2017, the correlation between oil prices and the PPI was 0.71. That's much stronger than the 0.27 correlation with the CPI, according to the Reserve Bank of India.

The weaker link between oil prices and consumer prices likely comes from the relatively higher weight of services in the Indian consumption basket, which you'd expect to rely less on oil as a production input.

Is Inflation Good or Bad for Oil Prices?

It depends on the time frame. In the short term, higher inflation tends to lead to higher oil prices. In the longer term, if the Indian Reserve raises interest rates and slows economic growth to control inflation, oil prices could decline as a result.

What Other Factors Can Cause Oil Prices to Rise?

In addition to the demand for oil to produce a host of products plus its use by the transportation industry, other factors that can cause oil prices to rise include geopolitical tensions, tight supply, and growing economic strength.

While the price of oil has historically correlated with inflation, that relationship has become less pronounced since the 1970s. The loosening of this correlation is likely a result of the growth of the service sector which uses energy less intensively than manufacturing.

Since oil is a key input in manufacturing and a major cost factor in shipping, oil prices have tended to have a greater effect on the cost of goods than services, which also explains the relatively weak correlation between oil and CPI and the strong one between crude and PPI.

Dr. VIVEK KUMAR


Associate Professor of Economics

Govt. College Kosli (Rewari)



Paradigms in Food Preservation

Infestation of pests, contamination and mould infestation are main concerns faced by the agricultural sector, leading to regular losses to the extent of 20-30% of the production. Prevention of post-harvest deterioration is, therefore, a national issue for agriculture planning. Food preservation is generally carried out using certain chemicals such as benzoates, parabens, sorbates, sulphites, nitrites, nitrates, etc. Use of radiations provides a healthy and eco-friendly solution to this problem as it eliminates the use of chemicals in food preservation. The method involves exposure of food and agricultural commodities to controlled doses of gamma radiation. This process results in favorable outcomes such as disinfestations of pests, delayed ripening, inhibition of sprouting and elimination of pathogens and microorganisms which causes spoilage. Radiation processing is the only method of killing pathogens in raw and frozen food. The radiation beam produces its effect by merely depositing its energy and does not lead to any radioactivity being generated in the target material. Radiation based processing of food is a method approved by various organizations such as IAEA, WHO, FAO and FSSAI. DAE has developed irradiation technology for the preservation of vegetables, fruits, pulses, spices, seafood, etc. and transferred the technology to various entrepreneurs. Several such commercially operated facilities are available around the country. India is the second largest fruits and vegetables producer and third largest fish producer in the world but a major portion of the produce gets wasted due to the spoilage caused by the lack of cold chain facilities for storage and transport. An important recent contribution to the food preservation agenda has been the development of a liquid nitrogen-based system for refrigerated transport of vegetables, fruits, seafood, etc. Liquid nitrogen is a by-product of oxygen generation plants used extensively in industrial and medical sectors. A large untapped capacity, therefore, exists in the country for the generation of liquid nitrogen, making it relatively inexpensive. The technology is also an environmentally friendly solution since the use of diesel or CFC gases has been completely eliminated. Such refrigerated vans are known, have been named SHIVAY (Sheetal Vahak Yantra). A significant advantage of SHIVAYs is that they have multimodal logistical flexibility, being suited the mode of transport available at the sourcing location of the merchandise – railways, roadways or waterways. These systems require minimum maintenance and are therefore tough enough to be

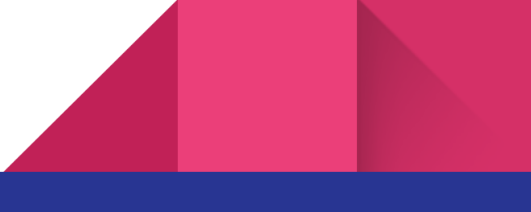


deployed even on rough road conditions. Recently an incubation agreement has been signed with Tata Motors Limited (TML) to jointly develop SHIVAYs for vehicular applications. This technology, when extensively deployed, will not only reduce wastage but also improve the economics and profitability for the growers, farmers and traders. An upgraded version of the system, “SHIVAY-V”, has been designed for reaching even lower temperatures of up to -70°C and can be used for storage and transport of vaccines also requiring such low temperatures. In addition to the technologies mentioned above, several other products and applications to serve the agriculture and food sector have emerged over the years, such as solar dryers, disinfectors, soil testing kits and various kinds of food processing techniques.

Yogesh Yadav
Assistant Professor of Botany

The Spirit of Literature

“Literature is a means of creating a new reality, one that transcends the limitations of our everyday lives” Jean Paul Sartre. Literature refers to written as well as oral works of imaginative, artistic or intellectual value, characterized by the use of language to convey ideas, emotions and experiences. It encompasses various forms of written expression, such as novels, poems, plays, essays, short stories and other literary genres. Literature is a unique form of expression because it is not limited to the communication of ideas or information. Instead, literature is a form of art that seeks to capture the essence of human experience and convey it through the use of language. According to Pickering and Hoepfer, “Literature is a unique human activity, born of man’s timeless desire to understand, express and finally share experiences”. In the words of William Shakespeare, “Literature is the expression of life in words of truth and beauty; it is the written record of man’s spirit, of his thoughts, emotions, aspirations; it is the history and the only history of the human soul. It is characterized by its artistic, its suggestive, its permanent qualities”. Literature essentially deals with human condition. To understand how literature accurately reflects the human condition, first we must understand what the human condition is and how it is reflected. In the simplest terms, human condition is the positive and negative aspects of being human and the experiences that follow. The human condition includes the characteristics, key events and situations which compose the essentials of human existence, such as birth, growth,




childhood, youth, old age, emotionality, aspiration, conflict, and morality, human nature, love, death and so on. Literature is a reflection of social, political, economic and cultural realities. It is a part and parcel of man's self-realization and a symbol of man's success and failure. It is a way of engaging with society and of challenging the status quo by projecting alternative visions of the world. It has the power to inspire change and promote social progress. It serves as a mirror that projects the complexities, nuances and truths of real life. One of the fundamental ways in which literature reflects real life is by capturing the societal norms, values and ideologies of a particular time and place. Literature often reflects the social, cultural and political issues of its era, providing readers with a glimpse into the prevailing beliefs, customs and attitudes of a society. It also mirrors the cultural and societal values of a particular community or region. Literature also serves as a mirror of human emotions and experiences. Through the portrayal of characters and the struggles (internal and external) they undergo, literature offers insights into the complexities of the human condition. It has the power to evoke empathy, compassion and understanding by portraying the joys, sorrows, triumphs and tribulations of the human experience. It portrays historical and political realities, shedding light on events, ideologies and struggles of a particular time. It also delves deep into philosophical and existential questions, inspiring and stimulating readers to contemplate the deeper meaning of human life and existence.

Manjeet Singh, Assistant Professor of English

Mathematics Matters in Everyday Life

When we think about Mathematics, a question generally comes to our mind that where and how Mathematics can be used in our daily life. Every aspect of life depends upon the use of numbers and arithmetic. Living a life without Mathematics seems empty. Once you come to know the use of Mathematics, you find that you can't imagine your life without Mathematics. It is as important as blood for human body. Here are some quotes given by famous people: "Without Mathematics, there's nothing you can do. Everything around you is Mathematics. Everything around you is numbers."- Shakuntala Devi, Indian writer and mental calculator. "Mathematics is the most beautiful and most powerful creation of the human spirit."- Stefan Bench Polish Mathematician. Here are some daily tasks for which Math is important:

1. **Managing Money:** -In today's life, we come across the problem of money management. A branch of Mathematics called 'Algebra' will help us to overcome



with this problem. Algebra teaches us to calculate interest and compound interest where the money of a person grows faster than a bank's saving account. People who take out loans need to understand interest. It will also help figure out the best ways to save and invest money.

2. **Recreational Sports:** - Geometry and Trigonometry can help who want to improve their skill in sports. It can help to find the best way to hit a ball, make a basket or run around the track. Velocity (speed as well as direction) of serving ball in tennis, volleyball is always helpful to gain a point. A sports commentator uses math to calculate the new score of a game when a team complete a play successfully. For example, if a basketball team has 70 points and complete a regular basket, the announcer may announce a new score of 75 by adding 5 points to the current score.

3. **Home Decorating and Remodeling:** - Whenever a person visits his relatives or neighbour's house, the first picture comes in his mind is their home decoration in which interior designer plays a vital role. They use area and volume calculation skill to calculate the proper layout of a room or buildings. It is also important for anyone who wants to install new tiles in a bathroom or a kitchen. Sometimes, they use geometry for better-looking designs.

4. **Cooking:** - People use math knowledge when cooking. For example, it is very common to use a half or double of a recipe. In this case, people use proportions and ratios to make correct calculation for each ingredient. The cook has to represent the amount using standard measure used in baking, such as cup or cup.

5. **Shopping:** - As the time passes, the rate of different items goes on increasing day by day. People want to purchase more and more items in a small amount of money. Many times, store often has sales that give a percentage off on original price. More percentage off means to have more option to purchase more items.

6. **Engineering:** - Math is the foundation of engineering. There are many fields in engineering like computer science, chemical science, civil, mechanical and aeronautical engineering. In every field of engineering, we use math like: for construction, measurement, programming, software developing for different type of languages of the computer. Binary Math is the heart of computer operation. The binary number is the most essential type of math which is utilized in computer science to symbolize each number in the computer. Hence in conclusion, when we think about our life, we must give a big thanks to the vital role of Mathematics.

Sandeep, Assistant Professor of Mathematics





वार्षिक खेल कूद प्रतियोगिता में विजेता खिलाड़ियों को सम्मानित करते हुए विधायक माननीय श्री लक्ष्मण सिंह यादव एवं प्राचार्य डॉ. सुधीर यादव

Noise of Success: Outcome of Consistent Hard Work

Success is an amalgamation of diverse parameters like diligence, failure, sacrifices, criticism, rejections, risks etc. but consistent hard work possesses imperative role in achieving goal and target.

Success = Consistency + Hard work

Self-discipline gives birth to success which starts within yourself without any secrets. Success is always not about magnitude, it's about consistency too. However, there is a vast difference between hard work and being consistent as on working hard at whatever thing, we explode after a time and need a season to relax, so nobody can do ceaseless strenuous

efforts forever. On the other hand, if we chatter about consistent work which means steady and regular effort over long time period on anything makes us success and reviving a sense of well-being and comfort, concluding that consistency always wins over hard work. So, whatever you do in life always be consistent. Through hard work, we can achieve our life goals with confidence and determination in a disciplined and dedicated way assuring us that it is essential ingredient in our life. It also teaches us that a person is unable to gain anything in life if he wishes to sit and wait for something instead of doing the same with consistency and this has been proved by history time and again. Our late Pandit Nehru, Prime Minister of India used to labor stiff in a day for 17 hours and 7 days a week to win freedom for our country and ultimately, they achieved victory in their ideas. He always remains alive in our hearts and lives.

Ultimately, we all are born to work for shining note for rest just like steel which shines in use and rust in rest. Hence, we all have to come out form comfort zone and to do hard work along with constancy and steadiness not to acquire merely name and fame but also to spread confidence, happiness, positive change, security, optimism, a sense of well-being, respect from peers, empowerment, comfort and genuine direction.

Dr. Manju Yadav
Assistant Professor of Chemistry

Importance of English in India

In our country English is important for a number of reasons. India is a land of diversity, different people speak different languages. A person of Tamil Nadu doesn't speak Hindi. So, he can't understand Hindi of a person from North India. However, he can understand English. English is a link language. Different people can communicate with one another with the help of English. Secondly, all advanced knowledge in Science, Technology and Medicine is available in English. The results of the latest researches come to India through the medium of English. If we give up English, we will lag behind in the fields of higher studies. Today the world has become one family. English is an international language. English is the languages of the constitution, the Supreme Court, the High Courts and official departments. English is now firmly rooted in the soil of India. It has become a part

of Indian life. Thus, English has great importance for the integrity of India. It has to be second language in our country for the better development of the country.

The Role of Media in our Society

In today's world media has made a very special place for itself in our lives. It would be no exaggeration to say that it governs a very important aspect of our living. In the words of Malcolm X, the famous American black militant leader who articulated the concepts of race pride and black nationalism in the 1960s. Media is the most powerful entity on earth. They have the power to make the innocent guilty and to make minds of the masses. The world of Media is irrespective of creed. Media has always been a very huge part of the society. Where it represents the society as a whole and acts as a mirror to the society, rejecting each and everything bad about it, its major duty is to educate, inform and entertain people, providing all the news that is required by a layman for his survival. In a democratic country like India, media gives the citizens the power to express themselves boldly against the unjust policies of the government and even raise their voice against the corrupt politicians. Media may be of different kinds such as tele - media which includes television and online media, or print media such as newspaper and magazines. Radio FMs and OTTs are also popular means of mass communication these days.

Vikash Sharma

Extension Lecturer (English)

(i) YOUR BEST

**If you always try your best
then you'll never have to wonder
about what you could have done
If you'd summoned all your thunder....
and if your best
was not as good
as you hoped it would be,
you still could say,
"I gave today,
all that I had in me."**

(ii) MOTHER

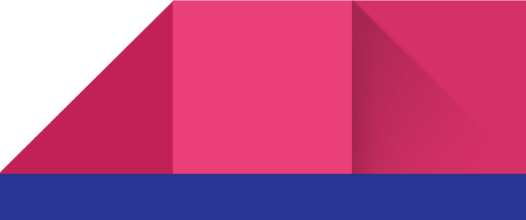
**The water of her womb, your first home.
The body she pulled apart to
Welcome you to the world.
The spirit in you, she helped
grow with all she knew.
The heart that she gave you
when yours fell apart.
You are her soft miracle.
So, she gives you her eyes to
see the best in the worst.
You carry your mother in your eyes.
Make her proud of all she watches you do.**

(iii)

**Success is no audient.
It is hard work,
Perseverance, leaving,
Studying, sacrifice
And most of all
Love of what
You are doing
Or learning to do.**

(iv)

**I am where I am
Because of my decisions!
If I want better results.
I must take better actions.
I will learn the lessons.
I will see the blessings.
I will not stop until my goals are realized.
When I reach that goal
I will set a bigger goal.
I will grow and grow and grow.
I accept full responsibility
for my results in life and**



**I challenge myself to become better!
Every year, every month, every week.
Every day, every moment.
I am committed.
I am determined.
I am self-made.**

**Tarun
B.Com 2nd Year**

WONDERFUL NATURE

**Oh GOD! You gave us a wonderful nature.
I wonder how it is so beautiful,
With green trees,
And buzzing bees.
Greenery is visible everywhere.
Birds are flying like my dreams.
The waterfalls are so cool,
Just like a swimming pool,
The sky in a brilliant shade of blue,
Looking at the sky, our dreams even shine.
I LOVE my nature,
This is so tall in Stature!**

Jyoti Yadav

B. Sc. 1st year

College Life: A Romanticized Phase

The word ‘college’ itself makes us land into a romanticized world; full of fantasy and freedom, freedom not only from the rigid school life, where you are supposed to wear a proper uniform with your skirts or your shirts tucked in your pants but also the whole lot of homework, punishments and the limited world where you are supposed to agree to whatever your teacher says because as the saying goes

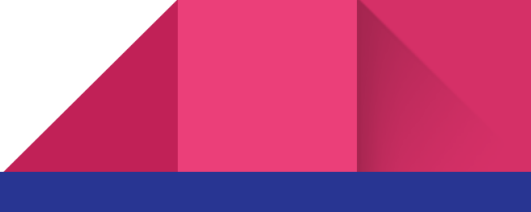
“School is the temple and teacher is the god” and a god can never be wrong. So, while being in school, the idea of a ‘college life’ waiting ahead for you provides you an escape from the dreads of school life, one can easily spend their whole day in school, daydreaming about the promising ‘college life’. College life just does not allow you to wear whatever you want or come to college whenever you want or attending a lecture depending on your mood. But it opens up a new world to you where you can express yourselves freely, where there is a limitless sky waiting for you to open your wings and fly high.

The phase of college life allows you to experience everything that you have been dreamt of. It gives you the opportunity to develop your personality, to build lifelong bonds and friendships, it provides you the space to voice out your opinions, to accept what you think is right, to empower yourself or in the simplest terms, it lays the ground for your future. College life and its experiences depend on one’s own subjectively. The joys of college life, mass bunking classes and going for a recently released movie, eating *gol- gappas* at side stalls or drinking tea at famous tea stall, fighting with a friend and patching up in the other hour, gossiping and ranting about professors stay with us throughout our life.

College life, in short, can be just a ‘phase’ of our life but this phase is the most awaited one or certainly the most- romanticized one which not only gives us pleasure but also teaches us values that accompany us throughout our life.

Megha

B.A.1stYear



Cultural Achievements

All-round development of students needs extracurricular activities along with academic knowledge. Keeping this in mind our college run a Cultural Cell in which we encourage students to participate in various cultural activities & events, and try to enhance their various talents. In this series the college organizes talent search and cultural fest program every year in college campus. Selected college students then participate in Zonal Youth festival organized by IGU Meerpur. During the past session of 2022-23, 27 students from our college have participated in 23 events in Zonal level Youth Festival (Hindola 2.0) and secured many prizes in this festival. In this festival, our student Nisha secured first position in Collage making, Jyoti secured Second position in poster making and Yashika, Sonal, Gayatri and Bhateri got 3rd position in Installation.



Govt. College Kosli in Media



रेवाड़ी

गुणवत्तापरक शिक्षा ही सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम : शिक्षा मंत्री कंवरपाल

कोसली राजकीय कॉलेज में दूसरा वीर्षांत समारोह आयोजित, 200 स्नातकों को प्रशान की डिप्टी

कोसली के शिक्षा, कला एवं खेल विभाग के अध्यक्ष डॉ. सुधीर कुमार ने कहा कि गुणवत्तापरक शिक्षा ही सर्वांगीण विकास का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही समाज में बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही समाज में बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के माध्यम से ही समाज में बदलाव लाया जा सकता है।



कोसली राजकीय कॉलेज में नरो के खिलाफ जागरूकता रैली निकालते छात्र। संवाद

कोसली महाविद्यालय की एनएसएस इकाई ने निकाली नरो के खिलाफ जागरूकता रैली

कोसली। राजकीय महाविद्यालय की एनएसएस इकाई की ओर से नरो से आगूदी पखवाड़ा के तहत नरो रैली जागरूकता रैली निकाली। रैली को प्राचार्य डॉ. सुधीर कुमार यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने विद्यार्थियों को नरो की लत से दूर रहने की सीख देते हुए इससे होने वाले नुकसान से समाज के अन्य लोगों को जागरूक करने के लिए प्रेरित किया।

साहित्य समाज का दर्पण : प्रो. जेपी कोसली में '21वीं सदी में अंतसुने एवं अनकहे लोगों का साहित्य' पर सेमिनार आयोजित

संवाद न्यूज एजेंसी

कोसली। राजकीय महाविद्यालय कोसली में वीरवार को राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इसका विषय '21वीं सदी में अंतसुने एवं अनकहे लोगों का साहित्य' रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में इंदिरा गांधी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जेपी यादव ने शिरकात की।



पुस्तक का विमोचन करते आईजीयू कुलपति प्रो. जेपी यादव व अन्य। संवाद

उन्होंने कहा कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। जो विभिन्न स्थानों में नुकसान हुआ जनमानस के दिल और दिमाग में दर्शक देता है। उनके कह बंगाली साहित्य हो या हिंदी, अंग्रेजी हो या हरियाणवी।

मुख्य अतिथि प्रो. जेपी यादव ने कहा कि अंतसुने साहित्य की सुरक्षा मासुदी में करने वाली है, लता अनुसंधान और अंतरिक्ष के दौरान बड़ी संख्या में अंतसुने साहित्य में आए, रचनाकारों ने अपने जगत तक अपनी भावनाओं को साहित्य के माध्यम से व्यक्त किया।

अब से कालेजी में ही विद्यार्थी कर सकेंगे आनलाइन आवेदन

जग. रेवाड़ी। शिक्षा के क्षेत्रों में एक अग्रसर से अग्रथ हो रहे जब तक के प्रवेश की सुविधाएँ पूरी हो गई हैं। इस बार डिप्लोमाओं को आवेदन करने में आकर आनलाइन आवेदन करने के लिए परचम लगी है। अधिकारियों का कहना है कि आनलाइन आवेदन करने को आवेदन के दौरान छात्रों को कोई भी परेशान नहीं रहेगी। अब छात्रों को ऑनलाइन आवेदन करने में कोई परेशान नहीं रहेगी। अब छात्रों को ऑनलाइन आवेदन करने में कोई परेशान नहीं रहेगी। अब छात्रों को ऑनलाइन आवेदन करने में कोई परेशान नहीं रहेगी।

रेवाड़ी

वॉल ऑफ हीरोज... 6 माह पहले हरियाणा शिक्षा परिषद की ओर से दिए गए थे निर्देश छात्रों में देशभक्ति का जज्बा जगाने को कोसली कॉलेज कैंपस में दीवार पर लगाए परमवीर चक्र विजेता रणबांकुरों के चित्र

कोसली न्यूज एजेंसी

कोसली में वीरवार को वीरवार पर परमवीर चक्र विजेता रणबांकुरों के चित्र दीवार पर लगाए गए। शिक्षा परिषद की ओर से दिए गए थे निर्देश छात्रों में देशभक्ति का जज्बा जगाने को कोसली कॉलेज कैंपस में दीवार पर लगाए परमवीर चक्र विजेता रणबांकुरों के चित्र।



तीन कॉलेजों में पीजी कक्षाओं की सीटों को मंजूरी मिली

संवाद न्यूज़ एजेंसी

कोसली। राजकीय महाविद्यालय कोसली में एमएससी मैथमेटिक्स एवं राजकीय महाविद्यालय गुरावड़ा में एमए फॉटो ग्राफिक्स की सीटों को मंजूरी मिल गई है। जिसके लिए विधायक लक्ष्मण सिंह यादव का धनवाह करने के लिए उनके वाहड़ रोड कार्यालय पर शनिवार को शिक्षक, विभिन्न गणों के जनसहनिधि पहुंचे।

विधायक ने कहा कि कोसली व गुरावड़ा में स्नातकोत्तर की सीटें मंजूर करवाने के लिए विधानसभा में भी इन्होंने पुराना तरीके से भाग रखा।

जिसका नतीजा है कि जिले के तीन कॉलेजों को स्नातकोत्तर सीटें मिली हैं। जिसमें दो कोसली विधानसभा में हैं।

इस अवसर पर वाहड़ ब्लॉक स्वीधी चैयरमैन दुष्यंत यादव, वाहड़ मंडल अध्यक्ष सरदार सिंह, महाविद्यालय कोसली प्राचार्य सुधीर यादव, महाविद्यालय गुरावड़ा प्राचार्य डॉ. राज्यमन्मू यादव, डा. प्रभास किशक कुमार, पूर्व जिला पार्षद अमित यादव, डॉ. लाजकोशल, विवेक, संजीव यादव, जसमीर सिंह, मीनिका, सीता रविश महाविद्यालय इलाहाबाद के सदस्य जयसंकांत राई, विधायक ने सभी को बधाई दी।



कोसली के राजकीय महाविद्यालय में एमएससी मैथ एवं राजकीय महाविद्यालय गुरावड़ा में एमए राजनीति विज्ञान की सीटें मंजूर कर दिए गए। विधायक लक्ष्मण सिंह यादव को मिठाई खिलाते शिक्षक।

जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में कोसली कॉलेज की टीम रही प्रथम



रेवाड़ी में जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में विजेता कोसली कॉलेज की टीम।

भास्कर न्यूज़ | रेवाड़ी

राजकीय महाविद्यालय कोसली में आयोजित हुई जिला स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी में राजकीय महाविद्यालय कोसली की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रदर्शनी में जिले के विभिन्न महाविद्यालयों के छात्रों ने विज्ञान प्रिजा। इन वर्ष प्रदर्शनी में कोविड-19 पर विद्यार्थियों ने सांझल बनाए थे। राजकीय महाविद्यालय कोसली की टीम ने कोविड-19 के फैलाव को रोकने के लिए सांझल बनाए, जिसमें टच फ्री हैंड सैनिटाइजर, डिस्पोजिबल कपड़े, अल्ट्रा और एयर प्यूरी

फायर शामिल थे। निर्णायक मंडल ने राजकीय महाविद्यालय कोसली की टीम के सांझल को सराहा। कोलेज प्राचार्य डॉ. सुधीर यादव ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को इस उपलब्धि पर बधाई देते हुए भविष्य में होने वाली राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी के लिए और बेहतर करने के लिए प्रेरित किया। डॉ. मन्मू यादव, डॉ. मनीषा देवी, संजीव कुमार, मोहन यादव व विवेक कुमार ने प्रथम आएं टीम के विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं। महाविद्यालय डा. प्रभास किशक यादव ने भी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को उपलब्धियों का सांझल किया।



कोसली राजकीय कॉलेज में नरो के खिलाफ जागरूकता रैली निकालते छात्र।

कोसली महाविद्यालय की एनएसएस इकाई ने निकाली नरो के खिलाफ जागरूकता रैली

कोसली। राजकीय महाविद्यालय की एनएसएस इकाई की ओर से नरो से आजादी पखवाड़ा के तहत नरो रोपी जागरूकता रैली निकाली। रैली को प्राचार्य डॉ. सुधीर कुमार यादव ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने विद्यार्थियों को नरो को लत से दूर रहने की सीख देते हुए इससे होने वाले नुकसान से समाज के अन्य लोगों को जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। जन जन को यह संदेश, नशा मुक्त हो अपना देश, जन जन का है यह अधिकार, नरो का करो बहिष्कार, जैसे नारे दिल्ली पॉस्टकार्ड स्वयंसेवकों ने हाथों में ली हुई थी। रैली का संचालन एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी बंदना निशाल और डॉ. लाज कोशल ने किया। प्र. मनजीत सिंह ने इस रैली में स्वयंसेवकों का उत्साह बढ़ाया। उपर वाणिज्य विभाग ने प्रशंसनीय प्रतियोगिता करवाई गई जिसका शुभारंभ प्राचार्य डॉ. सुधीर कुमार यादव ने किया। इस मौके पर यादव ने वाणिज्य संकाय की उपयोगिता समझाई और प्रशंसनीय के दौरान विद्यार्थियों से प्रेरण पुरे। विभागाध्यक्ष हकीकत ने प्रशंसावक की भूमिका निभाई। प्र. ओमप्रकाश यादव, नीलम यादव व रेणु ने विद्यार्थियों से प्रेरण पुरे। इस कार्यक्रम में आरती, अंमि व साथी की टीम प्रथम स्थान पर रही। इस कार्यक्रम में डा. मन्मू यादव, विकास शर्मा, प्र. ओमप्रकाश, प्र. संजीव, संदीप यादव, जसवंत जूझड़, पॉल, रतु, सीता, प्र. विवेक, प्र. विवेक और सुमित आदि मौजूद रहे।

कोसली राजकीय कॉलेज में रोपित की त्रिवेणी

भास्कर न्यूज़ | कोसली

राजकीय महाविद्यालय कोसली में वन महोत्सव का आयोजन किया गया। प्राचार्य डॉ. सुधीर यादव ने पीरल का पौधा लगाकर इसकी शुरुआत की। इसके बाद उपप्राचार्य प्रो. किशक कुमार ने बरगद और राष्ट्रीय सेवा योजना अधिकारी संजीव कुमार व बंदना निशाल ने नीम का पौधा लगाकर त्रिवेणी रोपित की। त्रिवेणी को शहरजी में भी पुरजनीय बनाया गया है। त्रिवेणी के पौधे औषधीय दृष्टि से तो महत्वपूर्ण होते ही हैं तथा शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करते हैं। इस दौरान डॉ. लाज कोशल, प्र. मोहन यादव, संदीप तथा अन्य स्टाफ सदस्यों व विद्यार्थियों ने भी पौधोपण किया।



अंतर कॉलेज बैडमिंटन स्पर्धा के दोनों वर्गों में कोसली महाविद्यालय प्रथम

भास्कर न्यूज़ | रेवाड़ी

हंदेर गांधी विश्वविद्यालय मोपुर के अंतर कॉलेज बैडमिंटन स्पर्धा में कोसली महाविद्यालय का प्रथम स्थान पर रही तथा दूसरे स्थान पर रही तथा प्रथम स्थान पर रही तथा दूसरे स्थान पर रही।

अमोल तथा नीलेश को टीम ने पहला स्थान प्राप्त किया। कोसली कॉलेज के प्राचार्य डॉ. सुधीर कुमार यादव ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उच्चलत प्रदर्शन की कामना की तथा विश्वविद्यालय की अतिरिक्त प्रतियोगिता के लिए प्रेरणा प्रदान किया। इस अवसर पर खेल प्रभारी मोहन यादव, डॉ. लाज कोशल, प्रीति, मोहन कुमार, मनीश सिंह व संजीव कुमार खोत अन्य मौजूद रहे।



कोसली कॉलेज को विजेता टीम।

कोसली व गुरावड़ा कॉलेजों में इसी सत्र से नए कोर्स शुरू होने से फायदा

भास्कर न्यूज़ | कोसली

कोसली के राजकीय महाविद्यालय में एमएससी मैथ एवं राजकीय महाविद्यालय गुरावड़ा में एमए राजनीति विज्ञान की सीटें मंजूर कर दिए गए। इस अवसर पर वाहड़ ब्लॉक स्वीधी चैयरमैन दुष्यंत यादव, वाहड़ मंडल अध्यक्ष सरदार सिंह, महाविद्यालय कोसली प्राचार्य सुधीर यादव, महाविद्यालय गुरावड़ा प्राचार्य डॉ. राज्यमन्मू यादव, डा. प्रभास किशक कुमार, पूर्व जिला पार्षद अमित यादव, डॉ. लाजकोशल, विवेक, संजीव यादव, जसमीर सिंह, मीनिका, सीता रविश महाविद्यालय इलाहाबाद के सदस्य जयसंकांत राई, विधायक ने सभी को बधाई दी।



एकदम यादव के प्रयास से शुरू हुए 'नरो कोसली' की विद्यार्थियों को प्रेरणा देना। विद्यार्थियों ने वाहड़ वि. के क्षेत्र के शिक्षकों के साथ मिल कर कोसली के प्रथम स्थान पर जीत हासिल की। इस अवसर पर वाहड़ ब्लॉक स्वीधी चैयरमैन दुष्यंत यादव, वाहड़ मंडल अध्यक्ष सरदार सिंह, कोसली स्तरीय समिति के अध्यक्ष मोहन यादव, डॉ. लाज कोशल, प्रो. सुधीर यादव, संजीव कुमार, मोहन यादव व विवेक कुमार ने प्रथम आएं टीम के विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दीं। महाविद्यालय डा. प्रभास किशक यादव ने भी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को उपलब्धियों का सांझल किया।

Achievements in Sports

The Department of Sports in our college is responsible for organizing and managing sports-related activities and programs specifically Annual Athletics Meet. This department typically oversees intramural and extramural sports, maintains sports facilities, coordinates tournaments and competitions, and promotes physical fitness among students. It also provide opportunities to the student for participating in Inter-College University and State Championships for all games. Recently students participated in State and University level Kabaddi, Volleyball, Basketball, Badiminton Championships and Players of Badminton (M &W) secured First position in Inter-College University Badminton Championship and Third position in Inter-College University Basketball Championship in session 2022-23. Department plays a crucial role in fostering a healthy and active campus community.



Players: Jitender, Anmol Yadav, Rohit Yadav, Kumar Nilesh, Seema and Tannu.

शोक सन्देश

इस भौतिक संसार में प्रत्येक जीव नश्वर है तथा जीव का इस संसार में आगमन एवं निर्गमन प्रकृति एवं परमेश्वर के अधीन है। महाविद्यालय परिवार के निम्नलिखित सदस्य, उनके सगे - संबंधियों के इस संसार की यात्रा पूर्ण करने पर महाविद्यालय परिवार अपनी शोक संवेदना प्रकट करता है।

१. स्व. श्री चंद्र प्रकाश, लैब अटेंडेंट
२. स्व. श्री सागर (श्रीमती नरेश, स्वीपर, का लड़का)
३. स्व. श्री अजय कुमार (श्री संदीप, सहायक आचार्य गणित विभाग, के छोटे भाई)
४. स्व. श्री राम सिंह यादव (श्री संजीव कुमार, सहायक आचार्य भौतिक विज्ञान, के पिताजी)
५. स्व. श्री जयपाल सिंह (श्री हकीकत, सहायक आचार्य वाणिज्य, के पिताजी)
६. स्व. श्री नारायण सिंह (श्री अजय कुमार, चौकीदार, के पिताजी)
७. स्व. श्री महावीर सिंह (श्रीमती नीलम यादव, एक्सटेंशन लेक्चरर वाणिज्य, के पिताजी)
९. स्व. श्री जगदीश चंद्र (श्रीमती सविता, एक्सटेंशन लेक्चरर गणित विभाग, के पिताजी)
१०. स्व. श्रीमती सोना देवी (श्री योगेश यादव, सहायक आचार्य वनस्पति विज्ञान, की दादी जी)

Teaching Staff (Regular)



Dr. Vivek Kumar
Asso. Prof. Economics



Sh. Surender Kumar
Asstt. Professor Hindi



Dr. Lajwanti
Professor Hindi



Sh. OmParkash
Asstt. Prof. Commerce



Sh. Hakikat
Asstt. Prof. Commerce



Sh. Yogesh Yadav
Asstt. Prof. Botany



Sh. Manjeet Kumar
Asstt. Prof. English



Sh. Sandeep
Asstt. Prof. Mathematics



Dr. Manju Yadav
Asstt. Prof. Chemistry



Dr. Ms. Priti
Asstt. Prof. History



Sh. Nagesh Kumar
Asstt. Prof. English



Sh. Vinod Kumar
Asstt. Prof. Geography



Dr. Vandana Nishal
Asstt. Prof. Chemistry



Dr. Sandhaya
Asstt. Prof. Physics



Sh. Sunil Kumar
Asstt. Prof. History



Sh. Sanjiv Kumar
Asstt. Prof. Physics



Sh. Tridev
Asstt. Prof. Maths

Teaching Staff (Extension)



Ms. Neelam
Extn. Lec.Commerce



Ms. Renu Yadav
Extn. Lec. Physics



Ms. Savita
Extn. Lec. Maths.



Sh. Jaswant
Extn. Lec. Chemistry



Sh. Vikash Sharma
Extn. Lec. English



Dr. Jasmer
Extn. Lec. Physics



Sh. Sandeep Yadav
Extn. Lec. Chemistry



Ms. Renu Rani



Dr. Monia
Extn. Lec. Maths



Science Exhibition inspection by Honble' M.L.A.,The Principal and The Jury

Non Teaching Staff



Sh. Vinay Kumar
Library Restorer



Sh. Dharam Singh
Lab Attendant comp



Sh. Kanwar Singh
Lab Attendant Geo.



Sh. Sumit Kumar
Lab Attendant Chem.



Sh. Deepak
Lab Attendant Bot.



Ms. Sapna
Lab Attendant Physics



Sh. Hansraj
Data Entry Op.



Ms. Mamta
Data Entry Op



Sh. Rajesh
Library Attendant



Sh. Ajay , Chowkidar



Smt. Mukesh, Peon



Sh. Pardeep, Peon



Sh. Tejpal , Mali



Sh. Pawan , Mali



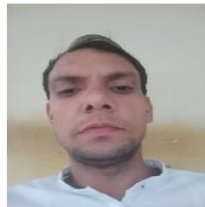
Sh. Sudhir, Chowkidar



Smt. Naresh Devi,
Sweeper



Smt. Shobha Devi,
Sweeper



Sh. Vicky
Chowkidar



OUR REAL HEROES : THE WALL OF HEROES



INSPECTION COMMITTEE ALONG WITH THE PRINCIPAL FOR M.Sc.(MATHS) FROM IGU MEERPUR